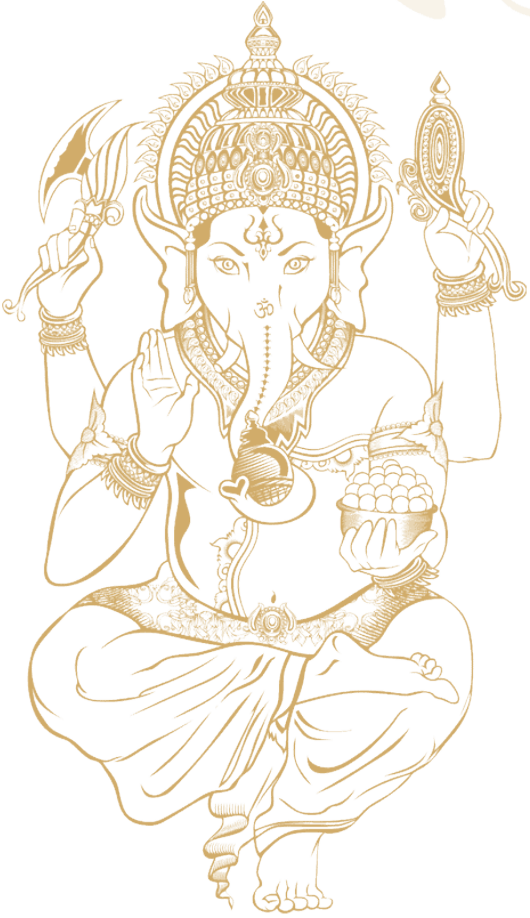

Manoj munjal

27 Aug 1985

09:32 AM

Jammu

Model: Web-KundliDarpan   Order No: 121022001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग : पुल्लिंग
जन्म तिथि : 27/08/1985
दिन : मंगलवार
जन्म समय : 09:32:00 घंटे
इष्ट : 08:45:31 घटी
स्थान : Jammu
राज्य : Jammu and Kashmi
देश : India

अक्षांश	32:42:00 उत्तर
रेखांश	74:52:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:30:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	09:01:28 घंटे
वेलान्तर	-00:01:34 घंटे
साम्पातिक काल	07:22:50 घंटे
सूर्योदय	06:01:47 घंटे
सूर्यास्त	19:01:47 घंटे
दिनमान	13:00:00 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	10:10:55 सिंह
लग्न के अंश	23:57:38 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कन्या - बुध
राशि-स्वामी	**मकर - शनि**
नक्षत्र-चरण	**उत्तराषाढ़ा - 2**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	सौभाग्य
करण	बालव
गण	मनुष्य
योनि	नकुल
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	भो-भोजराज
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +919815392337, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम :
पिता का नाम :
माता का नाम :
जाति :
गोत्र :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1907	भाद्रपद	5
पंजाबी	संवत : 2042	भाद्रपद	12
बंगाली	सन् : 1392	भाद्रपद	11
तमिल	संवत : 2042	आवनी	11
केरल	कोल्लम : 1161	चिगंम	11
नेपाली	संवत : 2042	भाद्रपद	12
चैत्रादि	संवत : 2042	श्रावण	शुक्ल 12
कार्तिकादि	संवत : 2042	श्रावण	शुक्ल 12

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि : 12
तिथि समाप्ति काल : 15:34:16
जन्म तिथि : 12
सूर्योदय कालीन नक्षत्र : उत्तराषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति काल : 25:35:52 घंटे
जन्म योग : उत्तराषाढ़ा
सूर्योदय कालीन योग : आयुष्मान
योग समाप्ति काल : 07:28:44 घंटे
जन्म योग : सौभाग्य
सूर्योदय कालीन करण : बालव
करण समाप्ति काल : 15:34:16 घंटे
जन्म करण : बालव
भयात : 19:32:29
भभोग : 59:42:08
भोग्य दशा काल : सूर्य 4 वर्ष 0 मा 9 दि

घात चक्र

मास : वैशाख
तिथि : 4-9-14
दिन : मंगलवार
नक्षत्र : रोहिणी
योग : वैधृति
करण : शकुनि
प्रहर : 4
वर्ग : मार्जार
लग्न : कुम्भ
सूर्य : कुम्भ
चन्द्र : सिंह
मंगल : मीन
बुध : धनु
गुरु : मेष
शुक्र : वृष
शनि : मकर
राहु : मिथुन

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

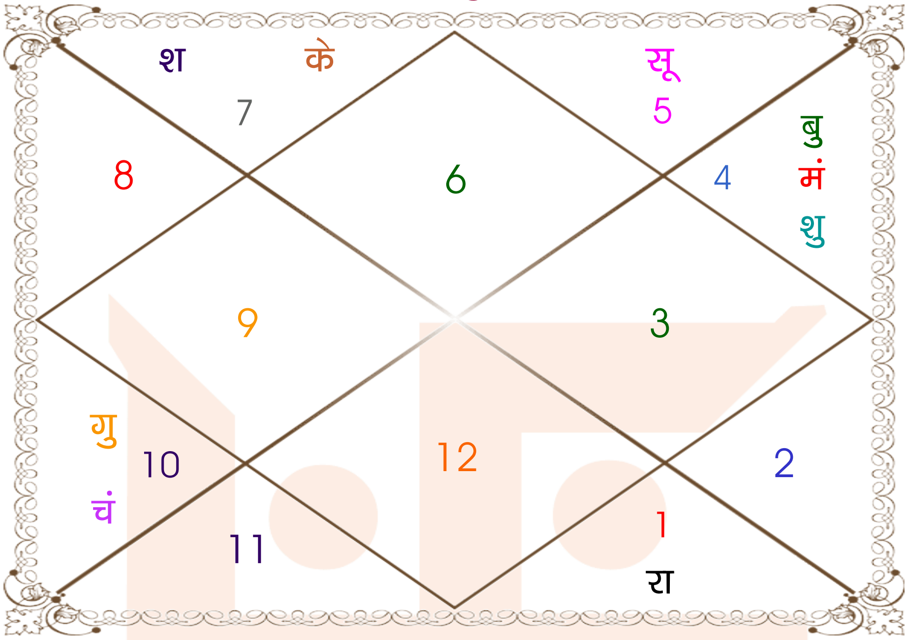

चन्द्र कुंडली

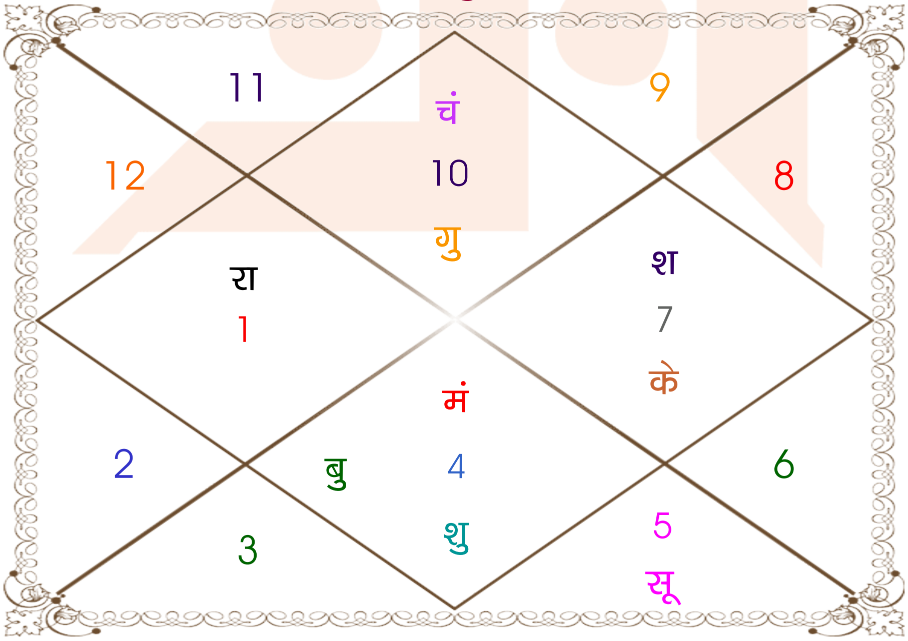

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

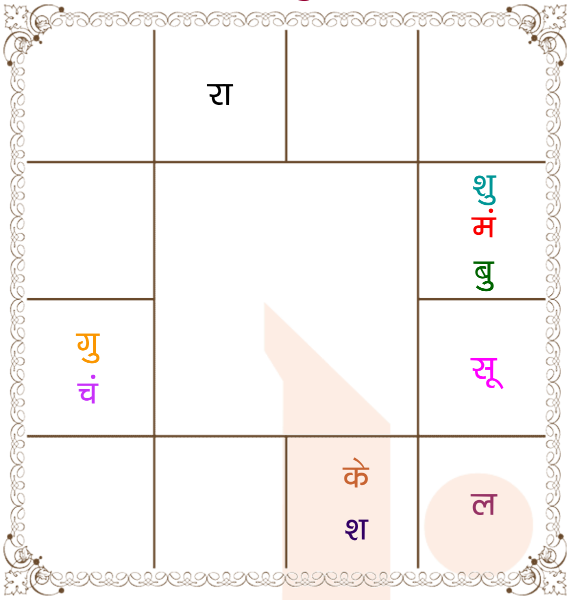

लग्न कुंडली

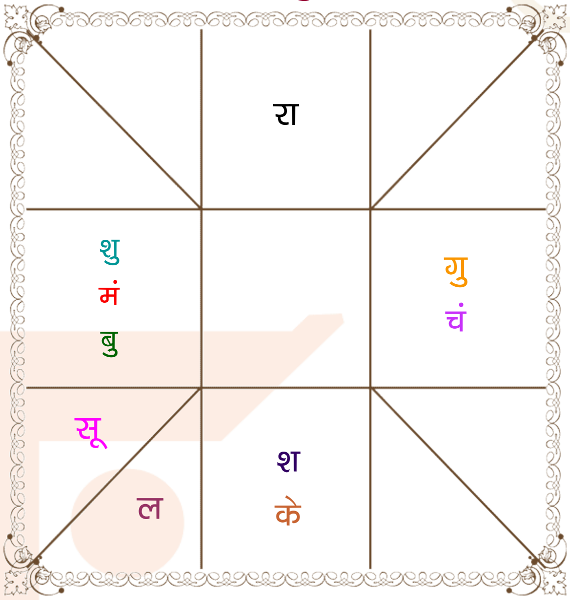

विंशोत्तरी
सूर्य 4वर्ष 0मा 9दि

सूर्य

27/08/1985

07/09/2103

सूर्य	06/09/1989
चन्द्र	06/09/1999
मंगल	06/09/2006
राहु	05/09/2024
गुरु	05/09/2040
शनि	06/09/2059
बुध	05/09/2076
केतु	06/09/2083
शुक्र	07/09/2103

योगिनी
संकटा 5वर्ष 4मा 13दि

संकटा

09/01/2019

09/01/2027

संकटा	19/10/2020
मंगला	09/01/2021
पिंगला	20/06/2021
धान्या	18/02/2022
भ्रामरी	09/01/2023
भद्रिका	19/02/2024
उल्का	20/06/2025
सिद्धा	09/01/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	23:57:38	305:45:03	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	मंगल	---
सूर्य			सिंह	10:10:55	00:57:55	मघा	4	10	सूर्य	केतु	शनि	मूलत्रिकोण
चंद्र			मक	01:03:05	13:25:59	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	सम राशि
मंगल		अ	कर्क	27:30:50	00:38:13	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	गुरु	नीच राशि
बुध			कर्क	22:03:04	00:47:55	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	सूर्य	शत्रु राशि
गुरु	व		मक	15:36:14	00:06:24	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	नीच राशि
शुक्र			कर्क	05:10:54	01:10:59	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	शत्रु राशि
शनि			तुला	28:38:59	00:03:03	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	उच्च राशि
राहु	व		मेष	18:11:12	00:08:44	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	राहु	शत्रु राशि
केतु	व		तुला	18:11:12	00:08:44	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	सम राशि
हर्ष			वृश्चि	20:18:58	00:00:13	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	---
नेप	व		धनु	07:15:49	00:00:31	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	---
प्लूटो			तुला	08:51:21	00:01:29	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	---
दशम भाव			मिथु	25:28:17	--	पुनर्वसु	--	7	बुध	गुरु	बुध	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:39:14

लग्न-चलित

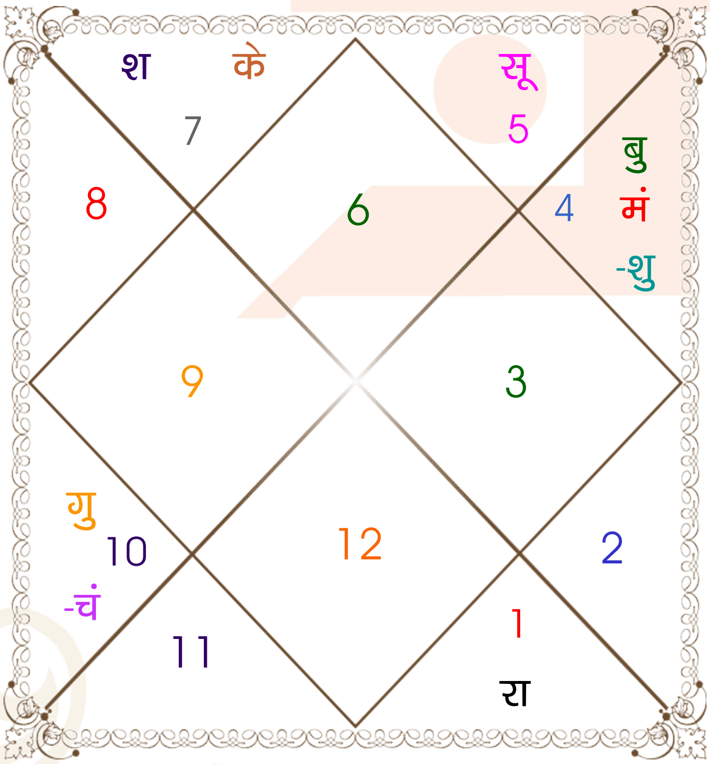

चन्द्र कुंडली

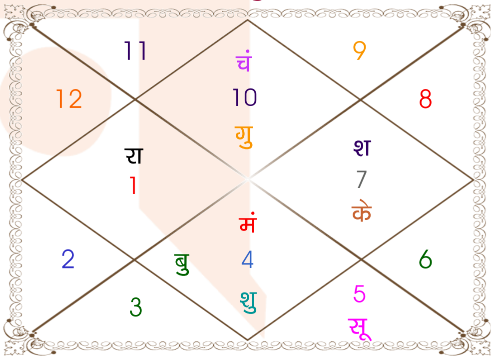

नवमांश कुंडली

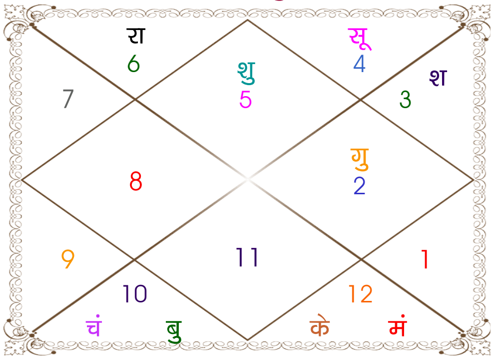

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कन्या	09:12:44	कन्या	23:57:38
2	तुला	09:12:44	तुला	24:27:51
3	वृश्चिक	09:42:57	वृश्चिक	24:58:04
4	धनु	10:13:11	धनु	25:28:17
5	मकर	10:13:11	मकर	24:58:04
6	कुम्भ	09:42:57	कुम्भ	24:27:51
7	मीन	09:12:44	मीन	23:57:38
8	मेष	09:12:44	मेष	24:27:51
9	वृष	09:42:57	वृष	24:58:04
10	मिथुन	10:13:11	मिथुन	25:28:17
11	कर्क	10:13:11	कर्क	24:58:04
12	सिंह	09:42:57	सिंह	24:27:51

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	23:57:38
2	तुला	22:10:21
3	वृश्चिक	22:59:33
4	धनु	25:28:17
5	मकर	27:49:21
6	कुम्भ	27:48:26
7	मीन	23:57:38
8	मेष	22:10:21
9	वृष	22:59:33
10	मिथुन	25:28:17
11	कर्क	27:49:21
12	सिंह	27:48:26

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा

चलित कुंडली

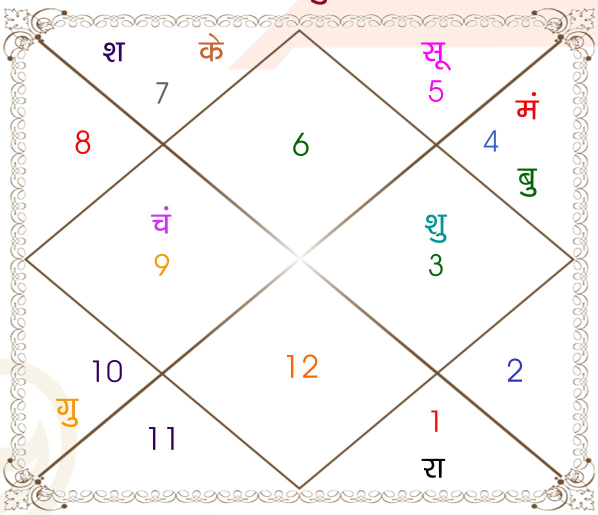

भाव कुंडली

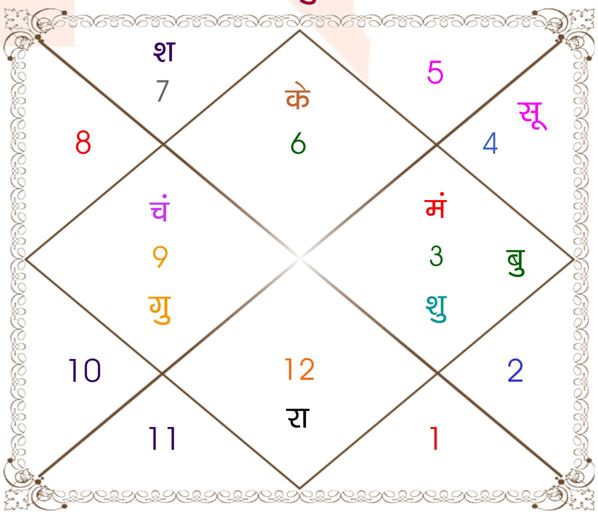

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------		-------- अवस्था --------				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	पुत्र	पितृ	कुमार	स्वस्थ	नेत्रपाणि	6.65	79 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	मृत	शक्त	गमन	3.48	62 %
मंगल	अमात्य	भ्रातृ	बाल	विकल	उपवेशन	0.00	53 %
बुध	भ्रातृ	ज्ञाति	कुमार	खल	कौतुक	1.41	48 %
गुरु	मातृ	धन	युवा	भीत	भोजन	0.49	45 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	मृत	खल	कौतुक	1.45	33 %
शनि	आत्मा	आयु	मृत	दीप्त	कौतुक	14.28	51 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	खल	कौतुक	0.00	41 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	शान्त	गमन	0.00	41 %
कुल						27.77	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा

चलित कुंडली

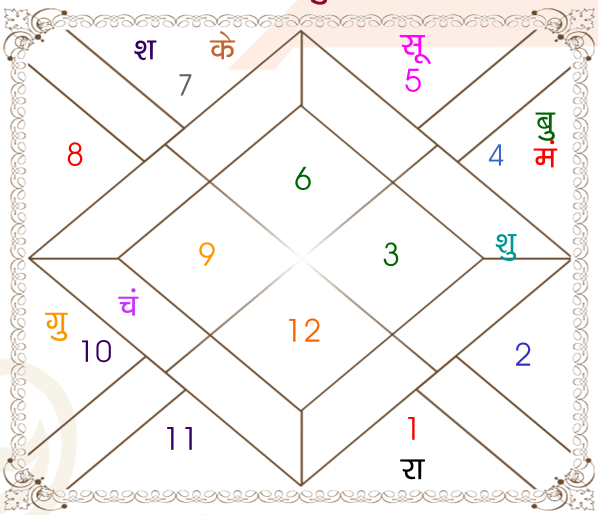

लग्न-चलित

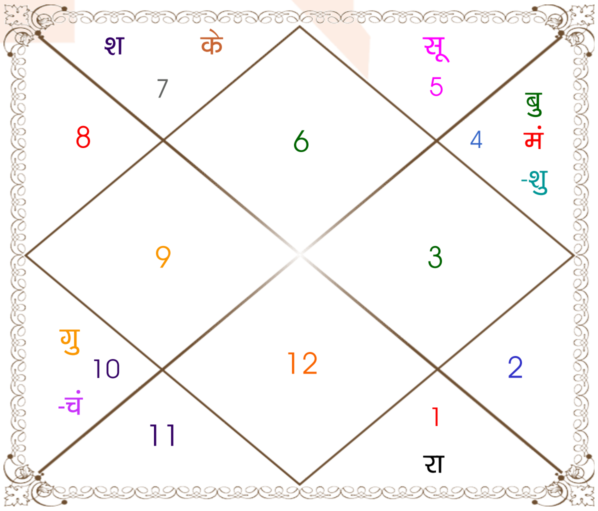

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

सुदर्शन चक्र

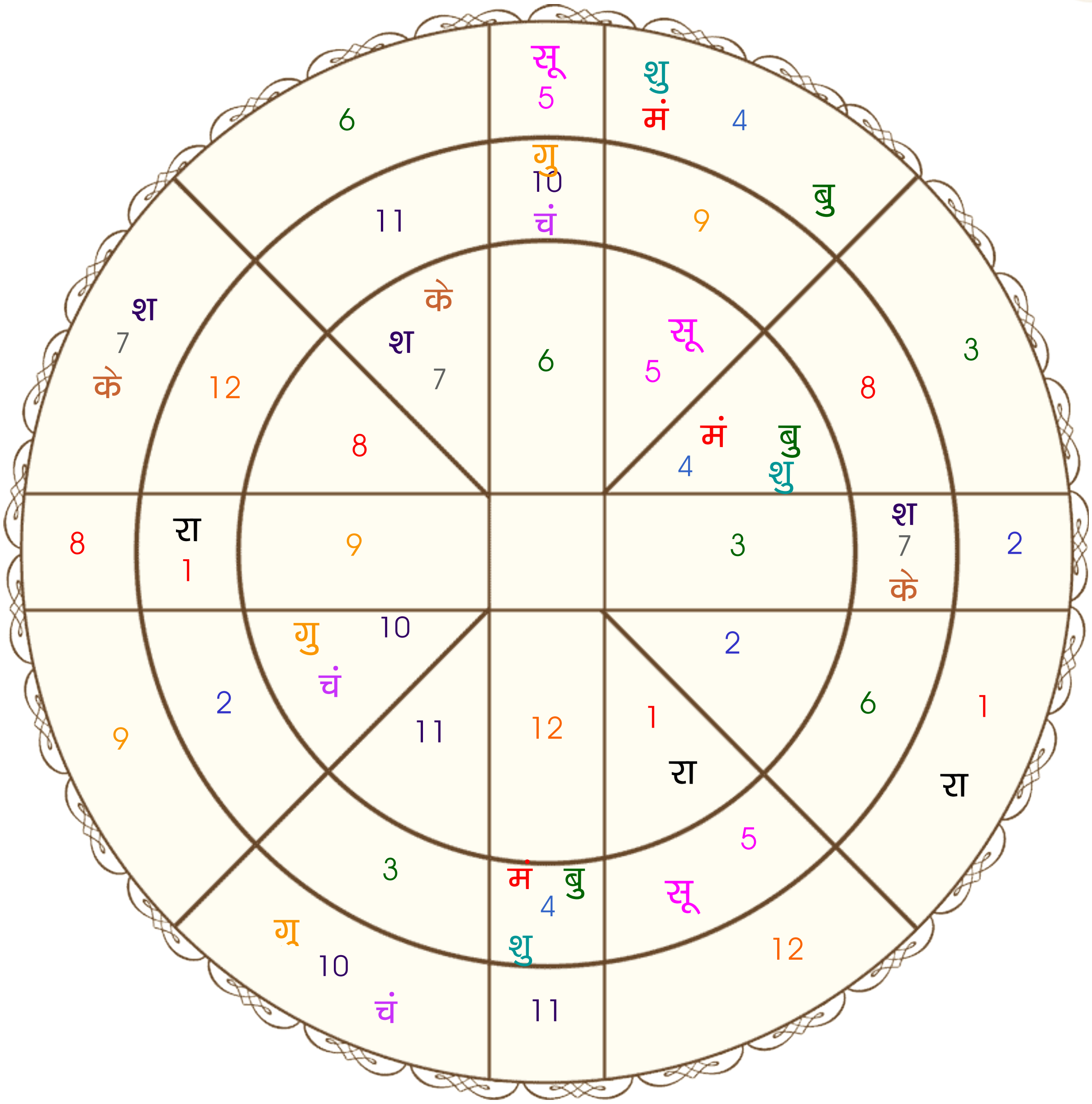

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : सूर्य 3 वर्ष 11 मास 23 दिन

ग्रह								निरयण भाव						
ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.	भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		सिंह	10:16:56	सूर्य	केतु	शनि	शुक्र	1	कन्या	24:03:38	बुध	मंगल	मंगल	चंद्र
चंद्र		मक	01:09:05	शनि	सूर्य	राहु	मंगल	2	तुला	22:16:21	शुक्र	गुरु	शनि	बुध
मंगल		कर्क	27:36:50	चंद्र	बुध	गुरु	मंगल	3	वृश्चि	23:05:34	मंगल	बुध	चंद्र	शुक्र
बुध		कर्क	22:09:05	चंद्र	बुध	सूर्य	शुक्र	4	धनु	25:34:18	गुरु	शुक्र	बुध	गुरु
गुरु	व	मक	15:42:15	शनि	चंद्र	शनि	शनि	5	मक	27:55:22	शनि	मंगल	शनि	शनि
शुक्र		कर्क	05:16:55	चंद्र	शनि	शनि	गुरु	6	कुंभ	27:54:27	शनि	गुरु	शुक्र	गुरु
शनि		तुला	28:45:00	शुक्र	गुरु	शुक्र	केतु	7	मीन	24:03:38	गुरु	बुध	मंगल	चंद्र
राहु	व	मेष	18:17:13	मंगल	शुक्र	राहु	राहु	8	मेष	22:16:21	मंगल	शुक्र	शनि	बुध
केतु	व	तुला	18:17:13	शुक्र	राहु	चंद्र	राहु	9	वृष	23:05:34	शुक्र	चंद्र	सूर्य	बुध
हर्ष		वृश्चि	20:24:58	मंगल	बुध	शुक्र	राहु	10	मिथु	25:34:18	बुध	गुरु	बुध	शनि
नेप	व	धनु	07:21:50	गुरु	केतु	राहु	चंद्र	11	कर्क	27:55:22	चंद्र	बुध	शनि	शनि
प्लूटो		तुला	08:57:22	शुक्र	राहु	गुरु	शनि	12	सिंह	27:54:27	सूर्य	सूर्य	चंद्र	शनि

के.पी. अयनांश : 23:33:13

फॉरच्युना : कुम्भ 14:55:48

लग्न कुंडली

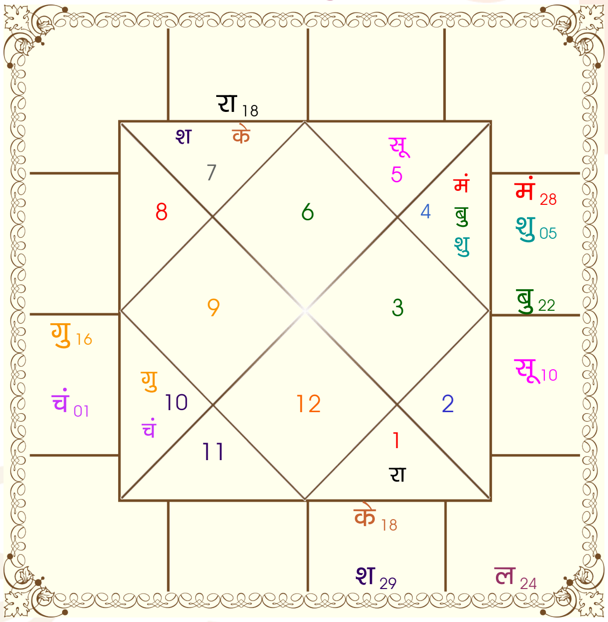

भाव कुंडली

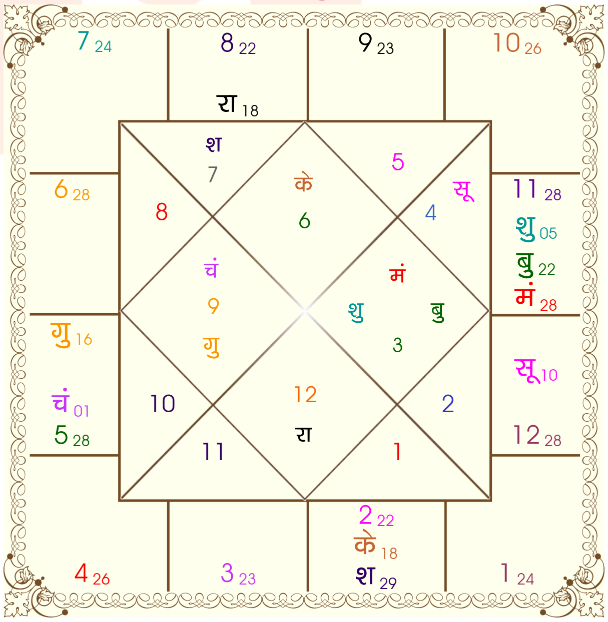

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य, मंगल- बुध, केतु,
2	शुक्र+ शनि, राहु-
3	मंगल-
4	चंद्र, गुरु+ शनि+
5	शुक्र- शनि-
6	शुक्र- शनि-
7	गुरु- शनि- राहु, केतु,
8	मंगल-
9	शुक्र- राहु-
10	मंगल+ बुध+ शुक्र, राहु,
11	सूर्य, चंद्र+ गुरु-
12	सूर्य- चंद्र-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1, 11, 12-
चंद्र	4, 11+ 12-
मंगल	1- 3- 8- 10+
बुध	1, 10+
गुरु	4+ 7- 11-
शुक्र	2+ 5- 6- 9- 10,
शनि	2, 4+ 5- 6- 7-
राहु	2- 7, 9- 10,
केतु	1, 7,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	सूर्य
राशि स्वामी	शनि
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	मंगल
राशि अन्तर स्वामी	राहु

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

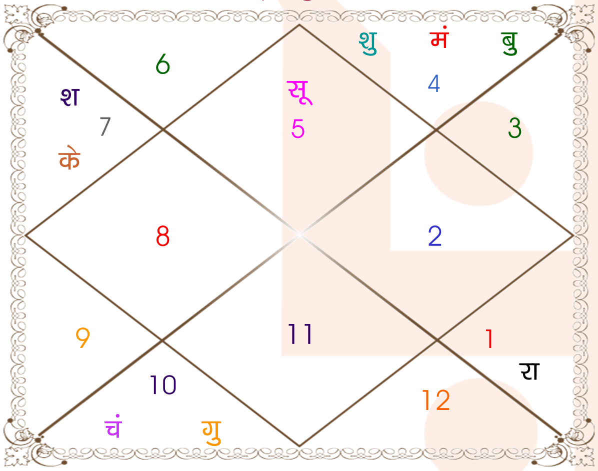

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

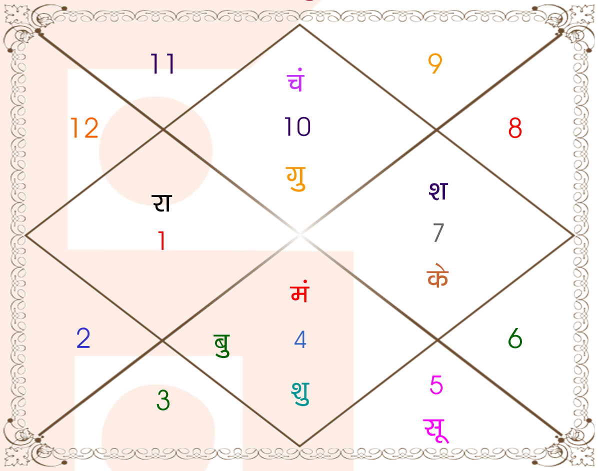

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

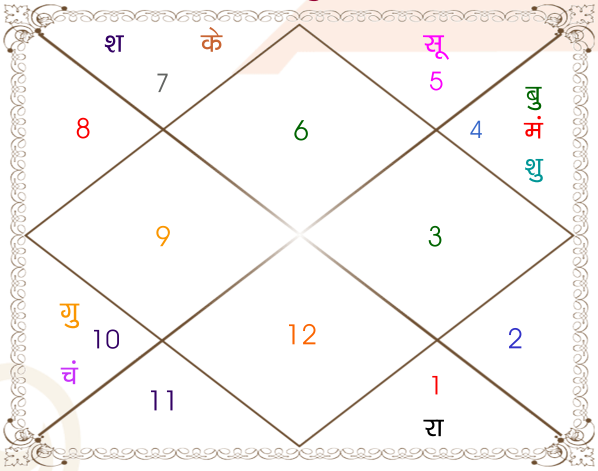

देह विचारः

होरा कुंडली

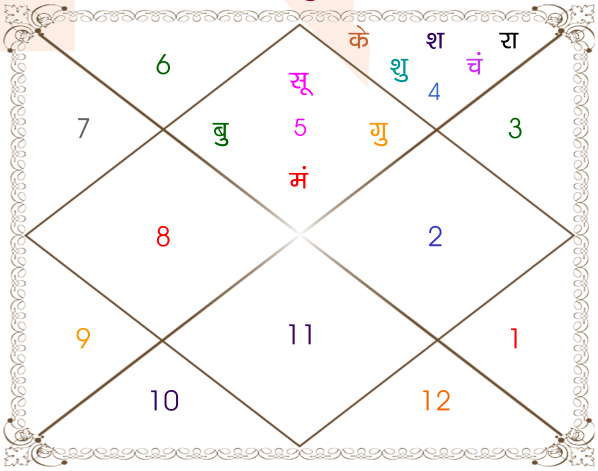

सम्पदाविचारः

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

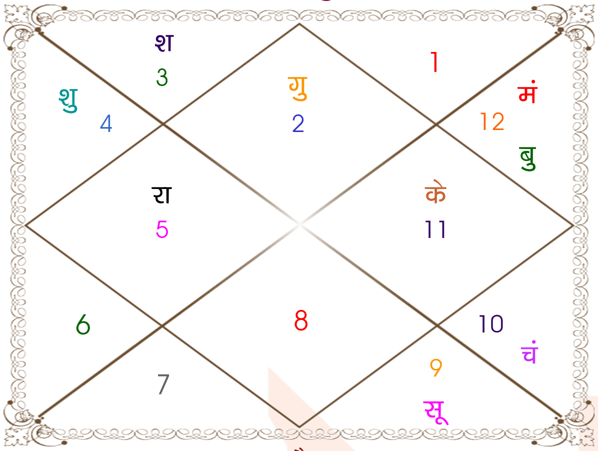

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

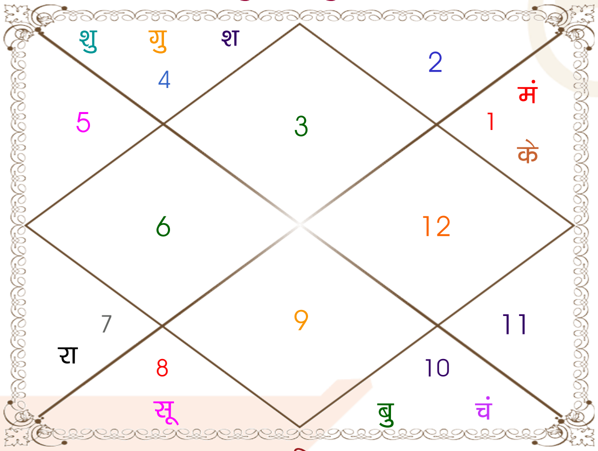

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

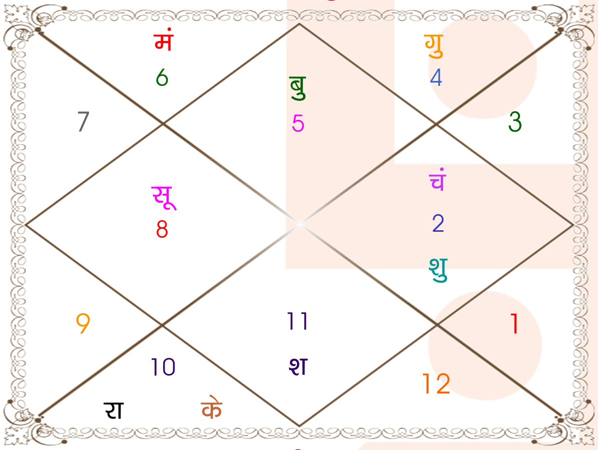

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

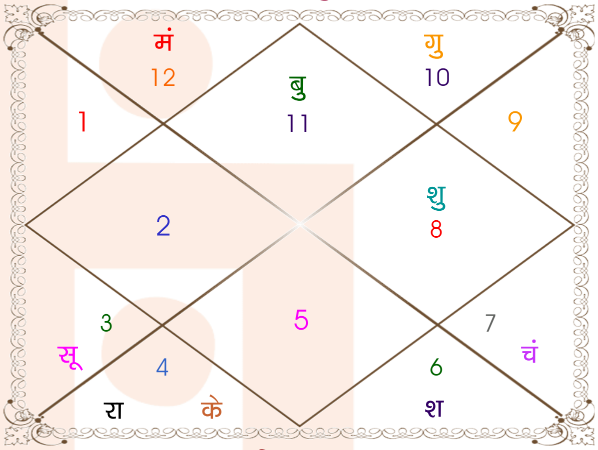

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

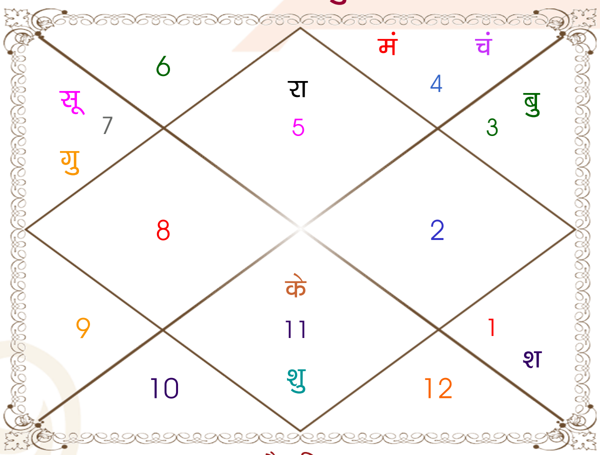

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

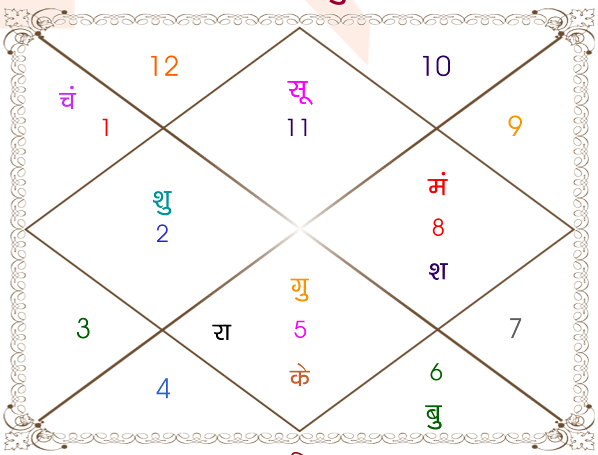

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

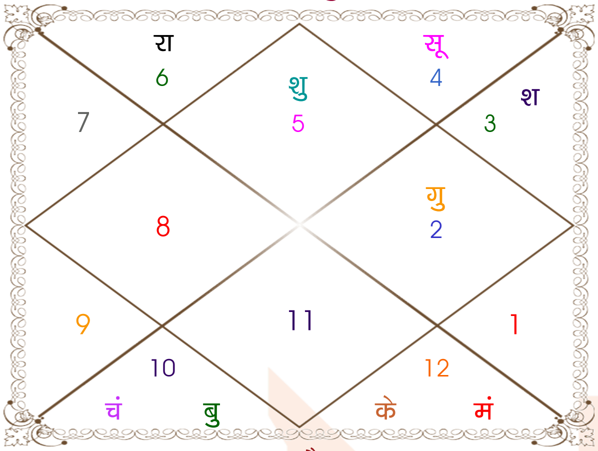

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

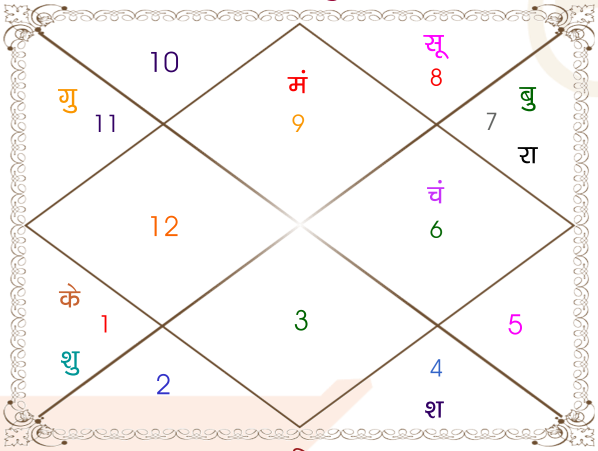

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

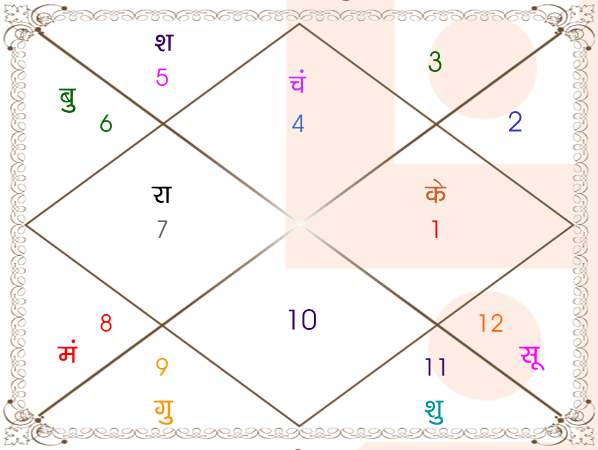

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

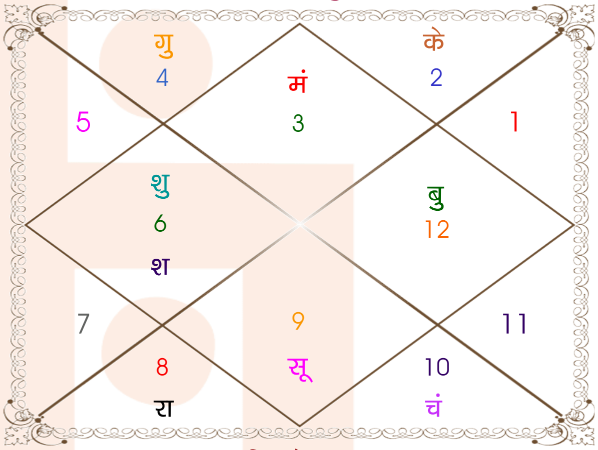

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

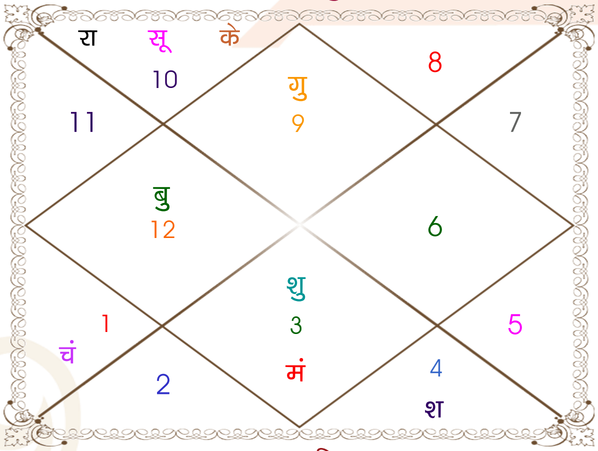

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

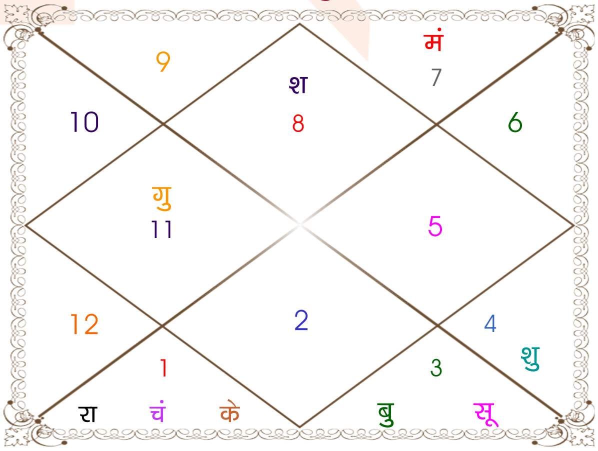

उपासनाज्ञानम्

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

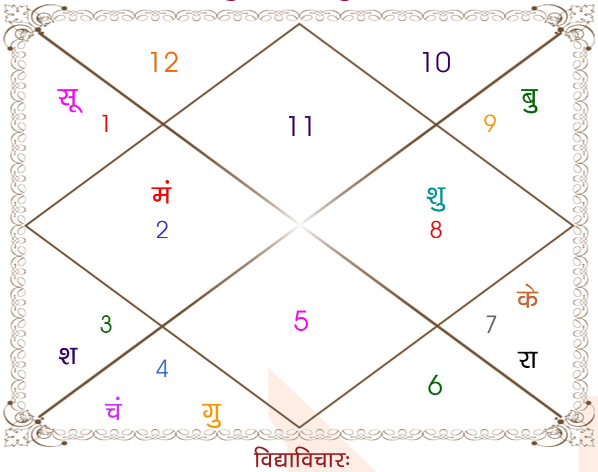

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

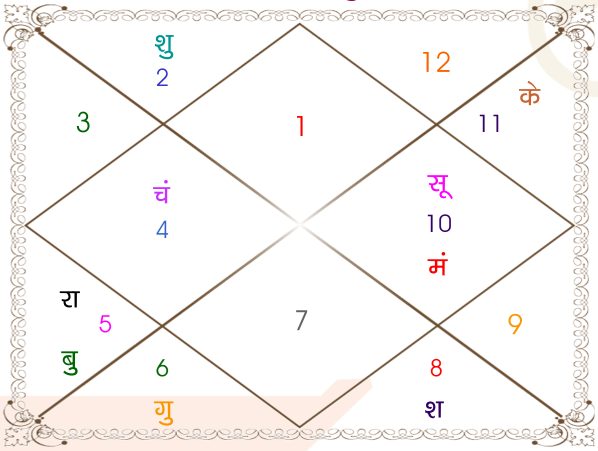

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

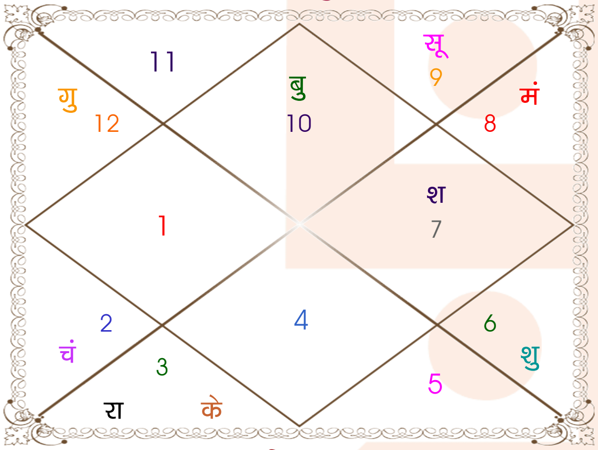

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

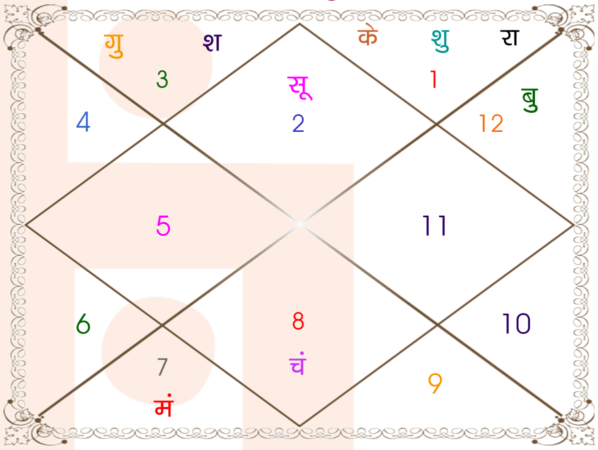

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

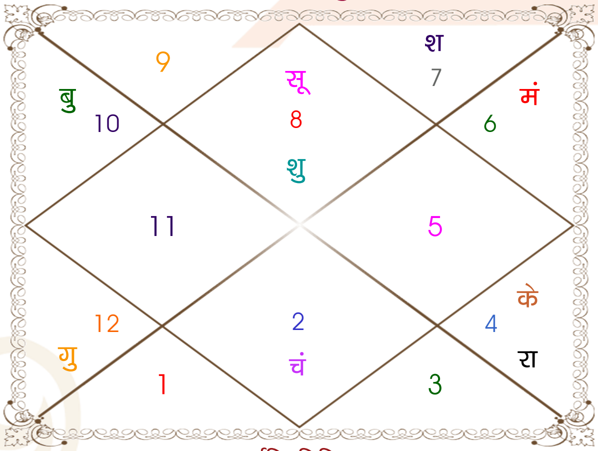

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

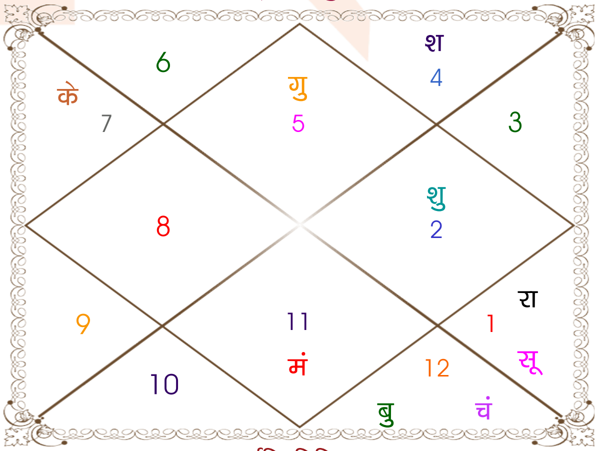

सर्वास्थितिविचारः

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +919815392370, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कन्या	सिंह	मक	कर्क	कर्क	मक	कर्क	तुला	मेष	तुला
होरा	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	वृष	धनु	मक	मीन	मीन	वृष	कर्क	मिथु	सिंह	कुंभ
चतुर्थांश	मिथु	वृश्चि	मक	मेष	मक	कर्क	कर्क	कर्क	तुला	मेष
सप्तमांश	सिंह	तुला	कर्क	कर्क	मिथु	तुला	कुंभ	मेष	सिंह	कुंभ
नवमांश	सिंह	कर्क	मक	मीन	मक	वृष	सिंह	मिथु	कन्या	मीन
दशमांश	धनु	वृश्चि	कन्या	धनु	तुला	कुंभ	मेष	कर्क	तुला	मेष
द्वादशांश	मिथु	धनु	मक	मिथु	मीन	कर्क	कन्या	कन्या	वृश्चि	वृष
षोडशांश	धनु	मक	मेष	मिथु	मीन	धनु	मिथु	कर्क	मक	मक
विंशांश	वृश्चि	मिथु	मेष	तुला	मिथु	कुंभ	कर्क	वृश्चि	मेष	मेष
चतुर्विंशांश	कुंभ	मेष	कर्क	वृष	धनु	कर्क	वृश्चि	मिथु	तुला	तुला
सप्तविंशांश	मेष	मक	कर्क	मक	सिंह	कन्या	वृष	वृश्चि	सिंह	कुंभ
त्रिंशांश	मक	धनु	वृष	वृश्चि	मक	मीन	कन्या	तुला	मिथु	मिथु
खवेदांश	वृष	वृष	वृश्चि	तुला	मीन	मिथु	मेष	मिथु	मेष	मेष
अक्षवेदांश	वृश्चि	वृश्चि	वृष	कन्या	मक	मीन	वृश्चि	तुला	कर्क	कर्क
षष्ट्यंश	सिंह	मेष	मीन	कुंभ	मीन	सिंह	वृष	कर्क	मेष	तुला

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
चन्द्र	2 किंसुक	3 व्यंजन	3 उत्तम	6 केरल
मंगल	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम
बुध	0 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	6 केरल
शुक्र	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
शनि	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
राहु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
केतु	1 ---	1 ---	1 ---	1 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	14.00	15.10	10.80	9.90	9.75	7.00	17.20	10.50	13.70
सप्तवर्ग	13.50	15.73	10.80	11.43	9.25	8.50	16.20	10.00	12.80
दशवर्ग	14.85	12.18	11.85	9.93	11.50	11.38	13.60	10.60	14.03
षोडशवर्ग	14.78	12.10	11.30	10.20	11.50	10.53	14.20	11.10	14.20

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु
राहु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	मित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु	सम
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	अतिमित्र
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	शत्रु	---	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	---	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र
शनि	सम	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	---	सम	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	सम	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	20	19	0	42	4	27	57
सप्तवर्गज बल	113	124	84	92	66	51	128
ओजयुग्मक बल	15	30	0	0	0	15	30
केन्द्र बल	15	30	30	30	30	30	30
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल स्थान बल	162	203	115	164	99	123	245
कुल दिग्बल	45	58	49	39	23	3	12
नतोन्नत बल	45	15	15	60	45	45	15
पक्ष बल	13	94	13	13	47	47	13
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	30	0	0	0	0	0	0
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	86	57	49	51	7	56	54
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	189	166	122	244	159	148	82
कुल चेष्टाबल	0	0	7	28	53	23	25
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	9	-11	21	22	-29	18	-23
कुल षट्बल	466	468	331	523	339	358	349
रूप षट्बल	7.8	7.8	5.5	8.7	5.6	6.0	5.8
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.6	1.3	1.1	1.2	0.9	1.1	1.2
संबंधित पद	1	2	5	3	7	6	4

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	27.79	30.14	1.07	34.54	13.69	24.99	38.16
कष्ट फल	29.20	23.03	56.26	23.70	19.85	34.85	9.97

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	523	358	331	339	349	349	339	331	358	523	468	466
भावदिग्बल	60	50	20	0	50	10	30	40	50	30	10	40
भावदृष्टि बल	81	46	9	9	28	27	45	41	38	24	63	41
कुल भाव बल	664	454	360	348	427	386	414	413	446	577	541	547
रूप भाव बल	11.1	7.6	6.0	5.8	7.1	6.4	6.9	6.9	7.4	9.6	9.0	9.1
संबंधित पद	1	5	11	12	7	10	8	9	6	2	4	3

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कन्या	23:57:38	--	--	चित्रा	1	14
गुलिक	गु	वृश्चि	22:12:17	--	--	ज्येष्ठा	2	18
काल	का	धनु	14:33:53	--	--	पूर्वाषाढ़ा	1	20
मृत्यु	मृ	सिंह	29:54:36	--	--	उ०फाल्गुनी	1	12
यमघंटक	यम	तुला	11:18:51	--	--	स्वाति	2	15
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कन्या	20:56:19	--	--	हस्त	4	13
धूम	धू	धनु	23:30:55	--	--	पूर्वाषाढ़ा	4	20
व्यतिपात	व्य	कर्क	06:29:05	--	--	पुष्य	1	8
परिवेश	परि	मक	06:29:05	--	--	उत्तराषाढ़ा	3	21
इन्द्रचाप	इ	मिथु	23:30:55	नीच	--	पुनर्वसु	2	7
उपकेतु	उप	कर्क	10:10:55	--	मूल	पुष्य	3	8

प्राणपद	:	मीन	11:13:52	कारकाँश लग्न	:	मिथु	17:50:54
भाव लग्न	:	वृश्चि	16:30:47	होरा लग्न	:	मक	09:03:55
घटी लग्न	:	वृष	02:56:39	वर्णद लग्न	:	धनु	26:58:27

उपग्रह कुंडली

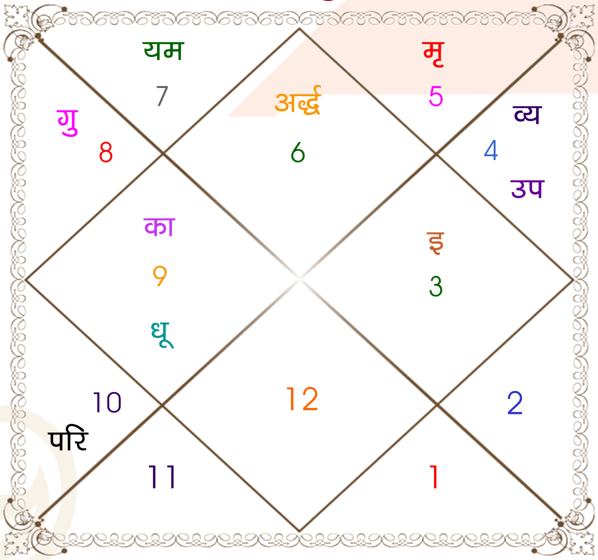

आरूढ़ कुंडली

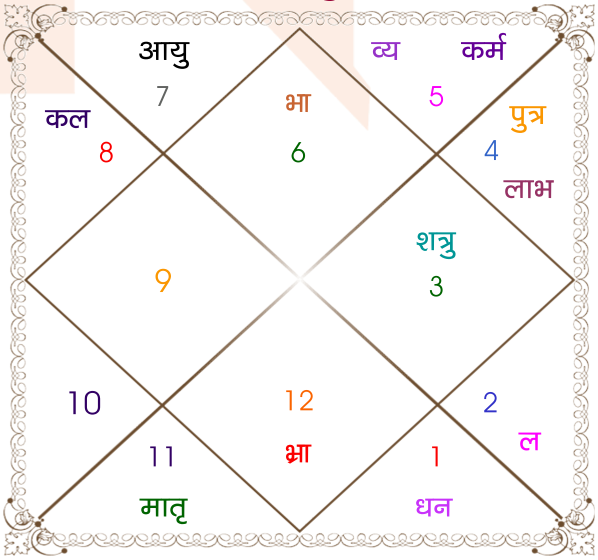

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	कुल
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
गुरु	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	7
चंद्र	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	4	3	3	6	3	3	3	4	4	5	7	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
गुरु	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
मंगल	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	1	6
सूर्य	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	6
शुक्र	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
कुल	5	5	4	4	4	3	4	3	4	5	6	2	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	7
गुरु	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	5
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
चंद्र	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	3
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
कुल	3	2	2	4	4	4	3	3	1	2	5	6	39

बुध का अष्टकवर्ग

	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
गुरु	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	5
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	6	5	3	5	5	4	3	4	3	6	4	6	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
सूर्य	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	9
शुक्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	6
बुध	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	9
कुल	3	6	6	5	6	2	5	5	4	5	5	4	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	7
गुरु	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	5
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
चंद्र	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	9
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
कुल	4	4	6	4	5	5	3	3	5	3	7	3	52

शनि का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
सूर्य	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	6
चंद्र	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6
कुल	0	5	6	0	4	4	2	5	7	1	2	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
गुरु	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	9
मंगल	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	7
चंद्र	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	3	6	5	4	3	4	3	3	4	4	7	3	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	5	7	1	2	3	0	5	6	0	4	4	39
गुरु	5	6	2	5	5	4	5	5	4	3	6	6	56
मंगल	2	5	6	3	2	2	4	4	4	3	3	1	39
सूर्य	4	5	7	3	4	3	3	6	3	3	3	4	48
शुक्र	3	7	3	4	4	6	4	5	5	3	3	5	52
बुध	6	4	6	6	5	3	5	5	4	3	4	3	54
चंद्र	4	4	3	4	3	4	5	6	2	5	5	4	49
बिन्दु	26	36	34	26	25	25	26	36	28	20	28	27	337
रेखा	30	20	22	30	31	31	30	20	28	36	28	29	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	5	7	0	0	3	0	4	4	0	4	3	30
गुरु	1	3	0	0	1	1	3	0	0	0	4	1	14
मंगल	0	3	3	2	0	0	1	3	2	1	0	0	15
सूर्य	1	2	4	0	1	0	0	3	0	0	0	1	12
शुक्र	0	4	0	0	1	3	1	1	2	0	0	1	13
बुध	2	1	2	3	1	0	1	2	0	0	0	0	12
चंद्र	2	0	0	0	1	0	2	2	0	1	2	0	10
रेखा	6	18	16	5	5	7	8	15	8	2	10	6	106

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	5	4	0	0	3	0	4	1	0	4	3	24
गुरु	1	0	0	0	1	1	3	0	0	0	4	1	11
मंगल	0	2	3	2	0	0	1	3	2	1	0	0	14
सूर्य	1	2	4	0	1	0	0	2	0	0	0	1	11
शुक्र	0	3	0	0	1	3	1	1	1	0	0	1	11
बुध	0	0	2	3	1	0	1	0	0	0	0	0	7
चंद्र	0	0	0	0	1	0	2	0	0	1	1	0	5
रेखा	2	12	13	5	5	7	8	10	4	2	9	6	83

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	97	40	106	45	99	91	218
ग्रह पिंड	5	30	60	70	20	10	0
शोध्य पिंड	102	70	166	115	119	101	218

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

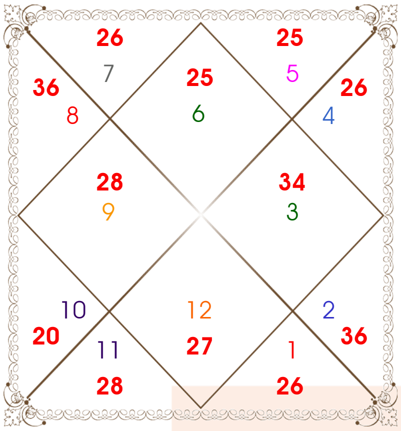

सूर्य का अष्टकवर्ग

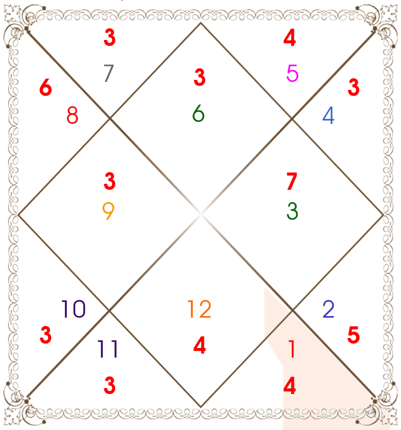

चंद्र का अष्टकवर्ग

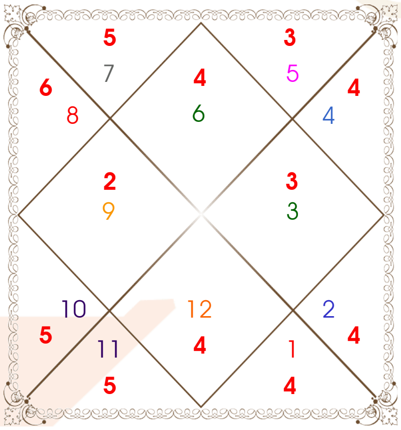

मंगल का अष्टकवर्ग

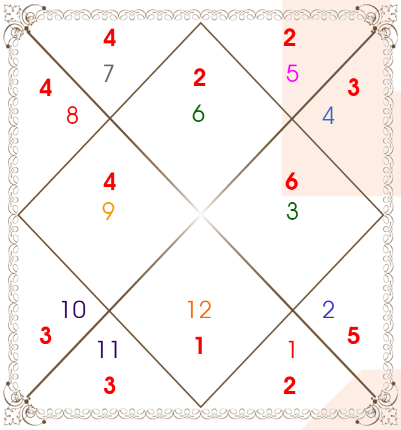

बुध का अष्टकवर्ग

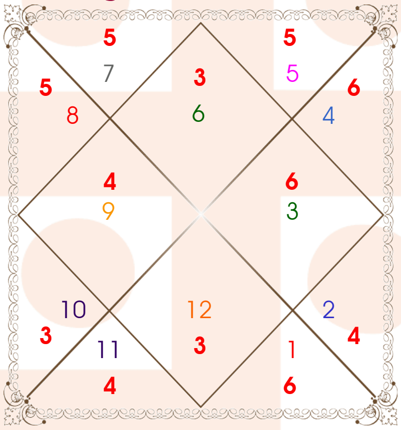

गुरु का अष्टकवर्ग

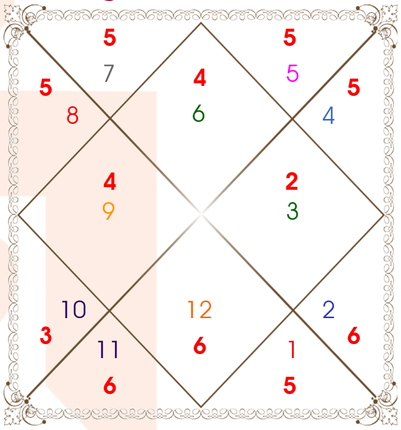

शुक्र का अष्टकवर्ग

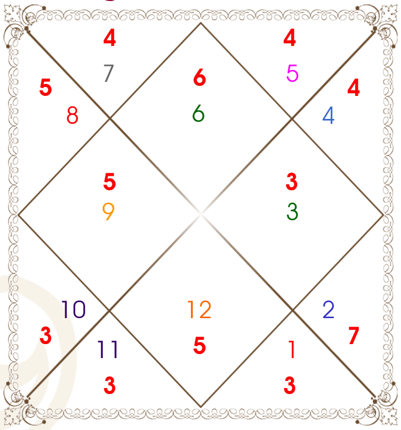

शनि का अष्टकवर्ग

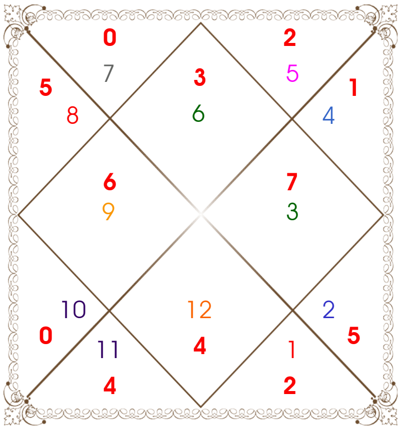

लग्न का अष्टकवर्ग

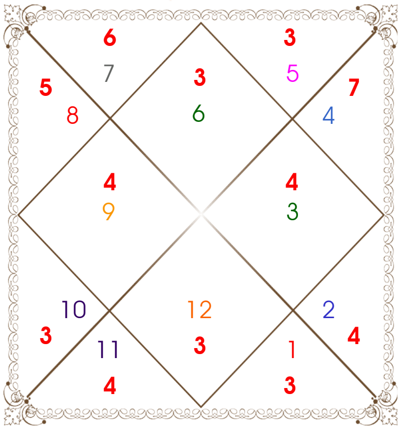

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 4 वर्ष 0 मास 9 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
27/08/1985		06/09/1989		06/09/1999		06/09/2006		05/09/2024	
06/09/1989		06/09/1999		06/09/2006		05/09/2024		05/09/2040	
	00/00/0000	चंद्र	07/07/1990	मंगल	02/02/2000	राहु	19/05/2009	गुरु	25/10/2026
	00/00/0000	मंगल	05/02/1991	राहु	20/02/2001	गुरु	13/10/2011	शनि	07/05/2029
	27/08/1985	राहु	06/08/1992	गुरु	27/01/2002	शनि	19/08/2014	बुध	13/08/2031
राहु	24/09/1985	गुरु	06/12/1993	शनि	08/03/2003	बुध	07/03/2017	केतु	19/07/2032
गुरु	13/07/1986	शनि	07/07/1995	बुध	04/03/2004	केतु	26/03/2018	शुक्र	20/03/2035
शनि	25/06/1987	बुध	06/12/1996	केतु	31/07/2004	शुक्र	25/03/2021	सूर्य	06/01/2036
बुध	01/05/1988	केतु	07/07/1997	शुक्र	30/09/2005	सूर्य	17/02/2022	चंद्र	07/05/2037
केतु	05/09/1988	शुक्र	08/03/1999	सूर्य	05/02/2006	चंद्र	19/08/2023	मंगल	13/04/2038
शुक्र	06/09/1989	सूर्य	06/09/1999	चंद्र	06/09/2006	मंगल	05/09/2024	राहु	05/09/2040

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
05/09/2040		06/09/2059		05/09/2076		06/09/2083		07/09/2103	
06/09/2059		05/09/2076		06/09/2083		07/09/2103		00/00/0000	
शनि	09/09/2043	बुध	02/02/2062	केतु	02/02/2077	शुक्र	06/01/2087	सूर्य	26/12/2103
बुध	19/05/2046	केतु	30/01/2063	शुक्र	04/04/2078	सूर्य	06/01/2088	चंद्र	25/06/2104
केतु	28/06/2047	शुक्र	30/11/2065	सूर्य	10/08/2078	चंद्र	06/09/2089	मंगल	31/10/2104
शुक्र	28/08/2050	सूर्य	06/10/2066	चंद्र	11/03/2079	मंगल	06/11/2090	राहु	28/08/2105
सूर्य	10/08/2051	चंद्र	07/03/2068	मंगल	07/08/2079	राहु	06/11/2093		00/00/0000
चंद्र	10/03/2053	मंगल	04/03/2069	राहु	24/08/2080	गुरु	07/07/2096		00/00/0000
मंगल	19/04/2054	राहु	21/09/2071	गुरु	31/07/2081	शनि	06/09/2099		00/00/0000
राहु	23/02/2057	गुरु	27/12/2073	शनि	09/09/2082	बुध	08/07/2102		00/00/0000
गुरु	06/09/2059	शनि	05/09/2076	बुध	06/09/2083	केतु	07/09/2103		00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 4 वर्ष 0 मा 13 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - राहु	सूर्य - गुरु	सूर्य - शनि	सूर्य - बुध	सूर्य - केतु
27/08/1985	**24/09/1985**	**13/07/1986**	**25/06/1987**	**01/05/1988**
24/09/1985	**13/07/1986**	**25/06/1987**	**01/05/1988**	**05/09/1988**
00/00/0000	गुरु 02/11/1985	शनि 06/09/1986	बुध 08/08/1987	केतु 08/05/1988
00/00/0000	शनि 18/12/1985	बुध 25/10/1986	केतु 26/08/1987	शुक्र 29/05/1988
00/00/0000	बुध 29/01/1986	केतु 15/11/1986	शुक्र 17/10/1987	सूर्य 05/06/1988
00/00/0000	केतु 15/02/1986	शुक्र 11/01/1987	सूर्य 02/11/1987	चंद्र 15/06/1988
00/00/0000	शुक्र 04/04/1986	सूर्य 29/01/1987	चंद्र 27/11/1987	मंगल 23/06/1988
00/00/0000	सूर्य 19/04/1986	चंद्र 27/02/1987	मंगल 16/12/1987	राहु 12/07/1988
27/08/1985	चंद्र 13/05/1986	मंगल 19/03/1987	राहु 31/01/1988	गुरु 29/07/1988
चंद्र 05/09/1985	मंगल 30/05/1986	राहु 10/05/1987	गुरु 12/03/1988	शनि 18/08/1988
मंगल 24/09/1985	राहु 13/07/1986	गुरु 25/06/1987	शनि 01/05/1988	बुध 05/09/1988

सूर्य - शुक्र	चंद्र - चंद्र	चंद्र - मंगल	चंद्र - राहु	चंद्र - गुरु
05/09/1988	**06/09/1989**	**07/07/1990**	**05/02/1991**	**06/08/1992**
06/09/1989	**07/07/1990**	**05/02/1991**	**06/08/1992**	**06/12/1993**
शुक्र 05/11/1988	चंद्र 01/10/1989	मंगल 20/07/1990	राहु 28/04/1991	गुरु 10/10/1992
सूर्य 24/11/1988	मंगल 19/10/1989	राहु 20/08/1990	गुरु 10/07/1991	शनि 26/12/1992
चंद्र 24/12/1988	राहु 04/12/1989	गुरु 18/09/1990	शनि 05/10/1991	बुध 05/03/1993
मंगल 14/01/1989	गुरु 13/01/1990	शनि 22/10/1990	बुध 22/12/1991	केतु 02/04/1993
राहु 10/03/1989	शनि 02/03/1990	बुध 21/11/1990	केतु 23/01/1992	शुक्र 23/06/1993
गुरु 28/04/1989	बुध 14/04/1990	केतु 03/12/1990	शुक्र 23/04/1992	सूर्य 17/07/1993
शनि 25/06/1989	केतु 02/05/1990	शुक्र 08/01/1991	सूर्य 20/05/1992	चंद्र 27/08/1993
बुध 15/08/1989	शुक्र 22/06/1990	सूर्य 18/01/1991	चंद्र 05/07/1992	मंगल 24/09/1993
केतु 06/09/1989	सूर्य 07/07/1990	चंद्र 05/02/1991	मंगल 06/08/1992	राहु 06/12/1993

चंद्र - शनि	चंद्र - बुध	चंद्र - केतु	चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य
06/12/1993	**07/07/1995**	**06/12/1996**	**07/07/1997**	**08/03/1999**
07/07/1995	**06/12/1996**	**07/07/1997**	**08/03/1999**	**06/09/1999**
शनि 08/03/1994	बुध 19/09/1995	केतु 18/12/1996	शुक्र 16/10/1997	सूर्य 17/03/1999
बुध 29/05/1994	केतु 19/10/1995	शुक्र 23/01/1997	सूर्य 16/11/1997	चंद्र 01/04/1999
केतु 01/07/1994	शुक्र 13/01/1996	सूर्य 02/02/1997	चंद्र 05/01/1998	मंगल 12/04/1999
शुक्र 06/10/1994	सूर्य 08/02/1996	चंद्र 20/02/1997	मंगल 10/02/1998	राहु 09/05/1999
सूर्य 04/11/1994	चंद्र 22/03/1996	मंगल 05/03/1997	राहु 12/05/1998	गुरु 02/06/1999
चंद्र 22/12/1994	मंगल 21/04/1996	राहु 06/04/1997	गुरु 01/08/1998	शनि 01/07/1999
मंगल 25/01/1995	राहु 08/07/1996	गुरु 04/05/1997	शनि 06/11/1998	बुध 27/07/1999
राहु 21/04/1995	गुरु 15/09/1996	शनि 07/06/1997	बुध 31/01/1999	केतु 07/08/1999
गुरु 07/07/1995	शनि 06/12/1996	बुध 07/07/1997	केतु 08/03/1999	शुक्र 06/09/1999

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - मंगल	मंगल - राहु	मंगल - गुरु	मंगल - शनि	मंगल - बुध
06/09/1999	02/02/2000	20/02/2001	27/01/2002	08/03/2003
02/02/2000	20/02/2001	27/01/2002	08/03/2003	04/03/2004
मंगल 15/09/1999	राहु 31/03/2000	गुरु 06/04/2001	शनि 01/04/2002	बुध 28/04/2003
राहु 07/10/1999	गुरु 21/05/2000	शनि 30/05/2001	बुध 28/05/2002	केतु 19/05/2003
गुरु 27/10/1999	शनि 21/07/2000	बुध 18/07/2001	केतु 21/06/2002	शुक्र 18/07/2003
शनि 20/11/1999	बुध 13/09/2000	केतु 06/08/2001	शुक्र 27/08/2002	सूर्य 06/08/2003
बुध 11/12/1999	केतु 05/10/2000	शुक्र 02/10/2001	सूर्य 17/09/2002	चंद्र 05/09/2003
केतु 20/12/1999	शुक्र 08/12/2000	सूर्य 19/10/2001	चंद्र 20/10/2002	मंगल 26/09/2003
शुक्र 13/01/2000	सूर्य 28/12/2000	चंद्र 17/11/2001	मंगल 13/11/2002	राहु 19/11/2003
सूर्य 21/01/2000	चंद्र 29/01/2001	मंगल 07/12/2001	राहु 13/01/2003	गुरु 06/01/2004
चंद्र 02/02/2000	मंगल 20/02/2001	राहु 27/01/2002	गुरु 08/03/2003	शनि 04/03/2004

मंगल - केतु	मंगल - शुक्र	मंगल - सूर्य	मंगल - चंद्र	राहु - राहु
04/03/2004	31/07/2004	30/09/2005	05/02/2006	06/09/2006
31/07/2004	30/09/2005	05/02/2006	06/09/2006	19/05/2009
केतु 13/03/2004	शुक्र 10/10/2004	सूर्य 06/10/2005	चंद्र 23/02/2006	राहु 01/02/2007
शुक्र 06/04/2004	सूर्य 31/10/2004	चंद्र 17/10/2005	मंगल 07/03/2006	गुरु 12/06/2007
सूर्य 14/04/2004	चंद्र 06/12/2004	मंगल 25/10/2005	राहु 08/04/2006	शनि 16/11/2007
चंद्र 26/04/2004	मंगल 31/12/2004	राहु 13/11/2005	गुरु 06/05/2006	बुध 03/04/2008
मंगल 05/05/2004	राहु 05/03/2005	गुरु 30/11/2005	शनि 09/06/2006	केतु 31/05/2008
राहु 27/05/2004	गुरु 30/04/2005	शनि 20/12/2005	बुध 09/07/2006	शुक्र 11/11/2008
गुरु 16/06/2004	शनि 07/07/2005	बुध 07/01/2006	केतु 22/07/2006	सूर्य 30/12/2008
शनि 10/07/2004	बुध 05/09/2005	केतु 15/01/2006	शुक्र 26/08/2006	चंद्र 23/03/2009
बुध 31/07/2004	केतु 30/09/2005	शुक्र 05/02/2006	सूर्य 06/09/2006	मंगल 19/05/2009

राहु - गुरु	राहु - शनि	राहु - बुध	राहु - केतु	राहु - शुक्र
19/05/2009	13/10/2011	19/08/2014	07/03/2017	26/03/2018
13/10/2011	19/08/2014	07/03/2017	26/03/2018	25/03/2021
गुरु 13/09/2009	शनि 26/03/2012	बुध 29/12/2014	केतु 29/03/2017	शुक्र 24/09/2018
शनि 30/01/2010	बुध 20/08/2012	केतु 21/02/2015	शुक्र 01/06/2017	सूर्य 18/11/2018
बुध 03/06/2010	केतु 20/10/2012	शुक्र 26/07/2015	सूर्य 21/06/2017	चंद्र 17/02/2019
केतु 24/07/2010	शुक्र 11/04/2013	सूर्य 11/09/2015	चंद्र 23/07/2017	मंगल 22/04/2019
शुक्र 17/12/2010	सूर्य 02/06/2013	चंद्र 27/11/2015	मंगल 14/08/2017	राहु 04/10/2019
सूर्य 30/01/2011	चंद्र 28/08/2013	मंगल 21/01/2016	राहु 10/10/2017	गुरु 27/02/2020
चंद्र 13/04/2011	मंगल 28/10/2013	राहु 08/06/2016	गुरु 01/12/2017	शनि 18/08/2020
मंगल 03/06/2011	राहु 02/04/2014	गुरु 11/10/2016	शनि 30/01/2018	बुध 20/01/2021
राहु 13/10/2011	गुरु 19/08/2014	शनि 07/03/2017	बुध 26/03/2018	केतु 25/03/2021

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - सूर्य	
25/03/2021	
17/02/2022	
सूर्य	11/04/2021
चंद्र	08/05/2021
मंगल	27/05/2021
राहु	16/07/2021
गुरु	29/08/2021
शनि	20/10/2021
बुध	05/12/2021
केतु	24/12/2021
शुक्र	17/02/2022

राहु - चंद्र	
17/02/2022	
19/08/2023	
चंद्र	04/04/2022
मंगल	06/05/2022
राहु	27/07/2022
गुरु	08/10/2022
शनि	03/01/2023
बुध	21/03/2023
केतु	22/04/2023
शुक्र	23/07/2023
सूर्य	19/08/2023

राहु - मंगल	
19/08/2023	
05/09/2024	
मंगल	10/09/2023
राहु	07/11/2023
गुरु	28/12/2023
शनि	27/02/2024
बुध	21/04/2024
केतु	13/05/2024
शुक्र	16/07/2024
सूर्य	05/08/2024
चंद्र	05/09/2024

गुरु - गुरु	
05/09/2024	
25/10/2026	
गुरु	18/12/2024
शनि	21/04/2025
बुध	09/08/2025
केतु	24/09/2025
शुक्र	31/01/2026
सूर्य	11/03/2026
चंद्र	15/05/2026
मंगल	30/06/2026
राहु	25/10/2026

गुरु - शनि	
25/10/2026	
07/05/2029	
शनि	20/03/2027
बुध	29/07/2027
केतु	21/09/2027
शुक्र	22/02/2028
सूर्य	09/04/2028
चंद्र	25/06/2028
मंगल	18/08/2028
राहु	04/01/2029
गुरु	07/05/2029

गुरु - बुध	
07/05/2029	
13/08/2031	
बुध	01/09/2029
केतु	20/10/2029
शुक्र	07/03/2030
सूर्य	17/04/2030
चंद्र	25/06/2030
मंगल	12/08/2030
राहु	14/12/2030
गुरु	04/04/2031
शनि	13/08/2031

गुरु - केतु	
13/08/2031	
19/07/2032	
केतु	02/09/2031
शुक्र	29/10/2031
सूर्य	15/11/2031
चंद्र	13/12/2031
मंगल	02/01/2032
राहु	22/02/2032
गुरु	08/04/2032
शनि	31/05/2032
बुध	19/07/2032

गुरु - शुक्र	
19/07/2032	
20/03/2035	
शुक्र	28/12/2032
सूर्य	15/02/2033
चंद्र	07/05/2033
मंगल	03/07/2033
राहु	26/11/2033
गुरु	05/04/2034
शनि	06/09/2034
बुध	22/01/2035
केतु	20/03/2035

गुरु - सूर्य	
20/03/2035	
06/01/2036	
सूर्य	03/04/2035
चंद्र	28/04/2035
मंगल	15/05/2035
राहु	28/06/2035
गुरु	06/08/2035
शनि	21/09/2035
बुध	01/11/2035
केतु	18/11/2035
शुक्र	06/01/2036

गुरु - चंद्र	
06/01/2036	
07/05/2037	
चंद्र	16/02/2036
मंगल	15/03/2036
राहु	27/05/2036
गुरु	31/07/2036
शनि	16/10/2036
बुध	24/12/2036
केतु	21/01/2037
शुक्र	13/04/2037
सूर्य	07/05/2037

गुरु - मंगल	
07/05/2037	
13/04/2038	
मंगल	27/05/2037
राहु	17/07/2037
गुरु	31/08/2037
शनि	24/10/2037
बुध	12/12/2037
केतु	01/01/2038
शुक्र	26/02/2038
सूर्य	15/03/2038
चंद्र	13/04/2038

गुरु - राहु	
13/04/2038	
05/09/2040	
राहु	22/08/2038
गुरु	17/12/2038
शनि	05/05/2039
बुध	06/09/2039
केतु	27/10/2039
शुक्र	21/03/2040
सूर्य	04/05/2040
चंद्र	16/07/2040
मंगल	05/09/2040

शनि - शनि	
05/09/2040	
09/09/2043	
शनि	26/02/2041
बुध	01/08/2041
केतु	04/10/2041
शुक्र	05/04/2042
सूर्य	30/05/2042
चंद्र	30/08/2042
मंगल	02/11/2042
राहु	16/04/2043
गुरु	09/09/2043

शनि - बुध	
09/09/2043	
19/05/2046	
बुध	27/01/2044
केतु	24/03/2044
शुक्र	04/09/2044
सूर्य	23/10/2044
चंद्र	13/01/2045
मंगल	11/03/2045
राहु	06/08/2045
गुरु	15/12/2045
शनि	19/05/2046

शनि - केतु	
19/05/2046	
28/06/2047	
केतु	12/06/2046
शुक्र	18/08/2046
सूर्य	08/09/2046
चंद्र	11/10/2046
मंगल	04/11/2046
राहु	04/01/2047
गुरु	27/02/2047
शनि	02/05/2047
बुध	28/06/2047

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
28/06/2047		28/08/2050		10/08/2051		10/03/2053		19/04/2054	
28/08/2050		10/08/2051		10/03/2053		19/04/2054		23/02/2057	
शुक्र	07/01/2048	सूर्य	14/09/2050	चंद्र	27/09/2051	मंगल	03/04/2053	राहु	22/09/2054
सूर्य	05/03/2048	चंद्र	13/10/2050	मंगल	31/10/2051	राहु	02/06/2053	गुरु	08/02/2055
चंद्र	09/06/2048	मंगल	02/11/2050	राहु	26/01/2052	गुरु	26/07/2053	शनि	23/07/2055
मंगल	16/08/2048	राहु	24/12/2050	गुरु	12/04/2052	शनि	29/09/2053	बुध	17/12/2055
राहु	05/02/2049	गुरु	09/02/2051	शनि	12/07/2052	बुध	25/11/2053	केतु	16/02/2056
गुरु	09/07/2049	शनि	05/04/2051	बुध	02/10/2052	केतु	19/12/2053	शुक्र	07/08/2056
शनि	09/01/2050	बुध	24/05/2051	केतु	05/11/2052	शुक्र	24/02/2054	सूर्य	28/09/2056
बुध	21/06/2050	केतु	13/06/2051	शुक्र	09/02/2053	सूर्य	16/03/2054	चंद्र	24/12/2056
केतु	28/08/2050	शुक्र	10/08/2051	सूर्य	10/03/2053	चंद्र	19/04/2054	मंगल	23/02/2057

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
23/02/2057		06/09/2059		02/02/2062		30/01/2063		30/11/2065	
06/09/2059		02/02/2062		30/01/2063		30/11/2065		06/10/2066	
गुरु	26/06/2057	बुध	09/01/2060	केतु	23/02/2062	शुक्र	22/07/2063	सूर्य	15/12/2065
शनि	20/11/2057	केतु	29/02/2060	शुक्र	24/04/2062	सूर्य	11/09/2063	चंद्र	10/01/2066
बुध	31/03/2058	शुक्र	25/07/2060	सूर्य	12/05/2062	चंद्र	07/12/2063	मंगल	28/01/2066
केतु	24/05/2058	सूर्य	07/09/2060	चंद्र	12/06/2062	मंगल	05/02/2064	राहु	16/03/2066
शुक्र	25/10/2058	चंद्र	19/11/2060	मंगल	03/07/2062	राहु	09/07/2064	गुरु	26/04/2066
सूर्य	10/12/2058	मंगल	09/01/2061	राहु	26/08/2062	गुरु	24/11/2064	शनि	15/06/2066
चंद्र	25/02/2059	राहु	21/05/2061	गुरु	13/10/2062	शनि	07/05/2065	बुध	29/07/2066
मंगल	20/04/2059	गुरु	16/09/2061	शनि	10/12/2062	बुध	01/10/2065	केतु	16/08/2066
राहु	06/09/2059	शनि	02/02/2062	बुध	30/01/2063	केतु	30/11/2065	शुक्र	06/10/2066

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
06/10/2066		07/03/2068		04/03/2069		21/09/2071		27/12/2073	
07/03/2068		04/03/2069		21/09/2071		27/12/2073		05/09/2076	
चंद्र	19/11/2066	मंगल	28/03/2068	राहु	22/07/2069	गुरु	10/01/2072	शनि	01/06/2074
मंगल	19/12/2066	राहु	21/05/2068	गुरु	23/11/2069	शनि	20/05/2072	बुध	18/10/2074
राहु	06/03/2067	गुरु	09/07/2068	शनि	19/04/2070	बुध	14/09/2072	केतु	15/12/2074
गुरु	14/05/2067	शनि	04/09/2068	बुध	29/08/2070	केतु	01/11/2072	शुक्र	27/05/2075
शनि	04/08/2067	बुध	25/10/2068	केतु	23/10/2070	शुक्र	19/03/2073	सूर्य	16/07/2075
बुध	17/10/2067	केतु	15/11/2068	शुक्र	27/03/2071	सूर्य	30/04/2073	चंद्र	06/10/2075
केतु	16/11/2067	शुक्र	15/01/2069	सूर्य	13/05/2071	चंद्र	08/07/2073	मंगल	02/12/2075
शुक्र	10/02/2068	सूर्य	02/02/2069	चंद्र	29/07/2071	मंगल	25/08/2073	राहु	27/04/2076
सूर्य	07/03/2068	चंद्र	04/03/2069	मंगल	21/09/2071	राहु	27/12/2073	गुरु	05/09/2076

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - केतु
05/09/2076
02/02/2077

केतु	14/09/2076
शुक्र	09/10/2076
सूर्य	16/10/2076
चंद्र	29/10/2076
मंगल	07/11/2076
राहु	29/11/2076
गुरु	19/12/2076
शनि	11/01/2077
बुध	02/02/2077

केतु - शुक्र
02/02/2077
04/04/2078

शुक्र	14/04/2077
सूर्य	05/05/2077
चंद्र	09/06/2077
मंगल	04/07/2077
राहु	06/09/2077
गुरु	02/11/2077
शनि	09/01/2078
बुध	10/03/2078
केतु	04/04/2078

केतु - सूर्य
04/04/2078
10/08/2078

सूर्य	10/04/2078
चंद्र	21/04/2078
मंगल	28/04/2078
राहु	17/05/2078
गुरु	03/06/2078
शनि	24/06/2078
बुध	12/07/2078
केतु	19/07/2078
शुक्र	10/08/2078

केतु - चंद्र
10/08/2078
11/03/2079

चंद्र	27/08/2078
मंगल	09/09/2078
राहु	11/10/2078
गुरु	08/11/2078
शनि	12/12/2078
बुध	11/01/2079
केतु	23/01/2079
शुक्र	28/02/2079
सूर्य	11/03/2079

केतु - मंगल
11/03/2079
07/08/2079

मंगल	19/03/2079
राहु	11/04/2079
गुरु	01/05/2079
शनि	24/05/2079
बुध	14/06/2079
केतु	23/06/2079
शुक्र	18/07/2079
सूर्य	25/07/2079
चंद्र	07/08/2079

केतु - राहु
07/08/2079
24/08/2080

राहु	03/10/2079
गुरु	23/11/2079
शनि	23/01/2080
बुध	18/03/2080
केतु	09/04/2080
शुक्र	12/06/2080
सूर्य	01/07/2080
चंद्र	02/08/2080
मंगल	24/08/2080

केतु - गुरु
24/08/2080
31/07/2081

गुरु	09/10/2080
शनि	02/12/2080
बुध	19/01/2081
केतु	08/02/2081
शुक्र	06/04/2081
सूर्य	23/04/2081
चंद्र	21/05/2081
मंगल	10/06/2081
राहु	31/07/2081

केतु - शनि
31/07/2081
09/09/2082

शनि	03/10/2081
बुध	30/11/2081
केतु	23/12/2081
शुक्र	01/03/2082
सूर्य	21/03/2082
चंद्र	24/04/2082
मंगल	17/05/2082
राहु	17/07/2082
गुरु	09/09/2082

केतु - बुध
09/09/2082
06/09/2083

बुध	30/10/2082
केतु	20/11/2082
शुक्र	20/01/2083
सूर्य	07/02/2083
चंद्र	09/03/2083
मंगल	30/03/2083
राहु	24/05/2083
गुरु	11/07/2083
शनि	06/09/2083

शुक्र - शुक्र
06/09/2083
06/01/2087

शुक्र	27/03/2084
सूर्य	27/05/2084
चंद्र	05/09/2084
मंगल	16/11/2084
राहु	17/05/2085
गुरु	26/10/2085
शनि	07/05/2086
बुध	27/10/2086
केतु	06/01/2087

शुक्र - सूर्य
06/01/2087
06/01/2088

सूर्य	24/01/2087
चंद्र	23/02/2087
मंगल	17/03/2087
राहु	11/05/2087
गुरु	28/06/2087
शनि	25/08/2087
बुध	16/10/2087
केतु	06/11/2087
शुक्र	06/01/2088

शुक्र - चंद्र
06/01/2088
06/09/2089

चंद्र	26/02/2088
मंगल	01/04/2088
राहु	02/07/2088
गुरु	21/09/2088
शनि	26/12/2088
बुध	22/03/2089
केतु	27/04/2089
शुक्र	06/08/2089
सूर्य	06/09/2089

शुक्र - मंगल
06/09/2089
06/11/2090

मंगल	01/10/2089
राहु	04/12/2089
गुरु	29/01/2090
शनि	07/04/2090
बुध	06/06/2090
केतु	01/07/2090
शुक्र	10/09/2090
सूर्य	01/10/2090
चंद्र	06/11/2090

शुक्र - राहु
06/11/2090
06/11/2093

राहु	19/04/2091
गुरु	12/09/2091
शनि	04/03/2092
बुध	06/08/2092
केतु	09/10/2092
शुक्र	10/04/2093
सूर्य	03/06/2093
चंद्र	03/09/2093
मंगल	06/11/2093

शुक्र - गुरु
06/11/2093
07/07/2096

गुरु	15/03/2094
शनि	17/08/2094
बुध	02/01/2095
केतु	27/02/2095
शुक्र	09/08/2095
सूर्य	27/09/2095
चंद्र	17/12/2095
मंगल	12/02/2096
राहु	07/07/2096

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - गुरु - शुक्र	
24/09/2025 02:05	
31/01/2026 22:53	
शुक्र	15/10/2025 17:33
सूर्य	22/10/2025 05:24
चंद्र	02/11/2025 01:08
मंगल	09/11/2025 14:57
राहु	29/11/2025 02:28
गुरु	16/12/2025 10:02
शनि	05/01/2026 23:32
बुध	24/01/2026 09:05
केतु	31/01/2026 22:53

गुरु - गुरु - सूर्य	
31/01/2026 22:53	
11/03/2026 21:56	
सूर्य	02/02/2026 21:38
चंद्र	06/02/2026 03:34
मंगल	08/02/2026 10:06
राहु	14/02/2026 06:22
गुरु	19/02/2026 11:02
शनि	25/02/2026 15:05
बुध	03/03/2026 03:33
केतु	05/03/2026 10:05
शुक्र	11/03/2026 21:56

गुरु - गुरु - चंद्र	
11/03/2026 21:56	
15/05/2026 20:20	
चंद्र	17/03/2026 07:48
मंगल	21/03/2026 02:42
राहु	30/03/2026 20:28
गुरु	08/04/2026 12:15
शनि	18/04/2026 19:00
बुध	27/04/2026 23:46
केतु	01/05/2026 18:41
शुक्र	12/05/2026 14:25
सूर्य	15/05/2026 20:20

गुरु - गुरु - मंगल	
15/05/2026 20:20	
30/06/2026 07:13	
मंगल	18/05/2026 11:58
राहु	25/05/2026 07:36
गुरु	31/05/2026 09:03
शनि	07/06/2026 13:46
बुध	14/06/2026 00:19
केतु	16/06/2026 15:57
शुक्र	24/06/2026 05:46
सूर्य	26/06/2026 12:18
चंद्र	30/06/2026 07:13

गुरु - गुरु - राहु	
30/06/2026 07:13	
25/10/2026 04:20	
राहु	17/07/2026 19:59
गुरु	02/08/2026 10:00
शनि	20/08/2026 22:08
बुध	06/09/2026 11:32
केतु	13/09/2026 07:10
शुक्र	02/10/2026 18:41
सूर्य	08/10/2026 14:56
चंद्र	18/10/2026 08:42
मंगल	25/10/2026 04:20

गुरु - शनि - शनि	
25/10/2026 04:20	
20/03/2027 16:28	
शनि	17/11/2026 09:03
बुध	08/12/2026 03:10
केतु	16/12/2026 16:17
शुक्र	10/01/2027 02:18
सूर्य	17/01/2027 10:07
चंद्र	29/01/2027 15:07
मंगल	07/02/2027 04:14
राहु	01/03/2027 03:39
गुरु	20/03/2027 16:28

गुरु - शनि - बुध	
20/03/2027 16:28	
29/07/2027 18:29	
बुध	08/04/2027 06:09
केतु	15/04/2027 21:40
शुक्र	07/05/2027 18:01
सूर्य	14/05/2027 07:19
चंद्र	25/05/2027 05:29
मंगल	01/06/2027 21:00
राहु	21/06/2027 12:54
गुरु	09/07/2027 00:22
शनि	29/07/2027 18:29

गुरु - शनि - केतु	
29/07/2027 18:29	
21/09/2027 17:55	
केतु	01/08/2027 22:03
शुक्र	10/08/2027 21:58
सूर्य	13/08/2027 14:44
चंद्र	18/08/2027 02:41
मंगल	21/08/2027 06:15
राहु	29/08/2027 08:34
गुरु	05/09/2027 13:17
शनि	14/09/2027 02:24
बुध	21/09/2027 17:55

गुरु - शनि - शुक्र	
21/09/2027 17:55	
22/02/2028 23:07	
शुक्र	17/10/2027 10:47
सूर्य	25/10/2027 03:50
चंद्र	07/11/2027 00:16
मंगल	16/11/2027 00:10
राहु	09/12/2027 03:21
गुरु	29/12/2027 16:51
शनि	23/01/2028 02:52
बुध	13/02/2028 23:12
केतु	22/02/2028 23:07

गुरु - शनि - सूर्य	
22/02/2028 23:07	
09/04/2028 05:28	
सूर्य	25/02/2028 06:38
चंद्र	29/02/2028 03:09
मंगल	02/03/2028 19:56
राहु	09/03/2028 18:29
गुरु	15/03/2028 22:32
शनि	23/03/2028 06:20
बुध	29/03/2028 19:38
केतु	01/04/2028 12:25
शुक्र	09/04/2028 05:28

गुरु - शनि - चंद्र	
09/04/2028 05:28	
25/06/2028 08:04	
चंद्र	15/04/2028 15:41
मंगल	20/04/2028 03:38
राहु	01/05/2028 17:14
गुरु	11/05/2028 23:58
शनि	24/05/2028 04:59
बुध	04/06/2028 03:09
केतु	08/06/2028 15:06
शुक्र	21/06/2028 11:32
सूर्य	25/06/2028 08:04

गुरु - शनि - मंगल	
25/06/2028 08:04	
18/08/2028 07:29	
मंगल	28/06/2028 11:38
राहु	06/07/2028 13:57
गुरु	13/07/2028 18:40
शनि	22/07/2028 07:47
बुध	29/07/2028 23:18
केतु	02/08/2028 02:52
शुक्र	11/08/2028 02:46
सूर्य	13/08/2028 19:32
चंद्र	18/08/2028 07:29

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

गुरु - शनि - राहु		गुरु - शनि - गुरु		गुरु - बुध - बुध		गुरु - बुध - केतु	
18/08/2028 07:29		04/01/2029 02:34		07/05/2029 11:32		01/09/2029 18:23	
04/01/2029 02:34		07/05/2029 11:32		01/09/2029 18:23		20/10/2029 01:27	
राहु	08/09/2028 03:09	गुरु	20/01/2029 13:22	बुध	24/05/2029 02:18	केतु	04/09/2029 14:00
गुरु	26/09/2028 15:18	शनि	09/02/2029 02:11	केतु	30/05/2029 22:30	शुक्र	12/09/2029 15:11
शनि	18/10/2028 14:43	बुध	26/02/2029 13:39	शुक्र	19/06/2029 11:39	सूर्य	15/09/2029 01:08
बुध	07/11/2028 06:37	केतु	05/03/2029 18:22	सूर्य	25/06/2029 08:23	चंद्र	19/09/2029 01:43
केतु	15/11/2028 08:56	शुक्र	26/03/2029 07:52	चंद्र	05/07/2029 02:58	मंगल	21/09/2029 21:20
शुक्र	08/12/2028 12:07	सूर्य	01/04/2029 11:55	मंगल	11/07/2029 23:10	राहु	29/09/2029 03:11
सूर्य	15/12/2028 10:40	चंद्र	11/04/2029 18:40	राहु	29/07/2029 13:23	गुरु	05/10/2029 13:44
चंद्र	27/12/2028 00:15	मंगल	18/04/2029 23:23	गुरु	14/08/2029 04:42	शनि	13/10/2029 05:15
मंगल	04/01/2029 02:34	राहु	07/05/2029 11:32	शनि	01/09/2029 18:23	बुध	20/10/2029 01:27

गुरु - बुध - शुक्र		गुरु - बुध - सूर्य		गुरु - बुध - चंद्र		गुरु - बुध - मंगल	
20/10/2029 01:27		07/03/2030 01:03		17/04/2030 10:32		25/06/2030 10:20	
07/03/2030 01:03		17/04/2030 10:32		25/06/2030 10:20		12/08/2030 17:23	
शुक्र	12/11/2029 01:23	सूर्य	09/03/2030 02:43	चंद्र	23/04/2030 04:31	मंगल	28/06/2030 05:56
सूर्य	18/11/2029 22:58	चंद्र	12/03/2030 13:31	मंगल	27/04/2030 05:06	राहु	05/07/2030 11:48
चंद्र	30/11/2029 10:56	मंगल	14/03/2030 23:28	राहु	07/05/2030 13:28	गुरु	11/07/2030 22:21
मंगल	08/12/2029 12:06	राहु	21/03/2030 04:29	गुरु	16/05/2030 18:15	शनि	19/07/2030 13:52
राहु	29/12/2029 04:51	गुरु	26/03/2030 16:57	शनि	27/05/2030 16:25	बुध	26/07/2030 10:04
गुरु	16/01/2030 14:24	शनि	02/04/2030 06:15	बुध	06/06/2030 10:59	केतु	29/07/2030 05:40
शनि	07/02/2030 10:44	बुध	08/04/2030 03:00	केतु	10/06/2030 11:34	शुक्र	06/08/2030 06:51
बुध	26/02/2030 23:52	केतु	10/04/2030 12:57	शुक्र	21/06/2030 23:32	सूर्य	08/08/2030 16:48
केतु	07/03/2030 01:03	शुक्र	17/04/2030 10:32	सूर्य	25/06/2030 10:20	चंद्र	12/08/2030 17:23

गुरु - बुध - राहु		गुरु - बुध - गुरु		गुरु - बुध - शनि		गुरु - केतु - केतु	
12/08/2030 17:23		14/12/2030 21:50		04/04/2031 07:07		13/08/2031 09:08	
14/12/2030 21:50		04/04/2031 07:07		13/08/2031 09:08		02/09/2031 06:23	
राहु	31/08/2030 08:27	गुरु	29/12/2030 15:04	शनि	25/04/2031 01:14	केतु	14/08/2031 12:58
गुरु	16/09/2030 21:51	शनि	16/01/2031 02:32	बुध	13/05/2031 14:55	शुक्र	17/08/2031 20:31
शनि	06/10/2030 13:45	बुध	31/01/2031 17:51	केतु	21/05/2031 06:26	सूर्य	18/08/2031 20:23
बुध	24/10/2030 03:59	केतु	07/02/2031 04:24	शुक्र	12/06/2031 02:46	चंद्र	20/08/2031 12:09
केतु	31/10/2030 09:50	शुक्र	25/02/2031 13:56	सूर्य	18/06/2031 16:04	मंगल	21/08/2031 15:59
शुक्र	21/11/2030 02:35	सूर्य	03/03/2031 02:24	चंद्र	29/06/2031 14:14	राहु	24/08/2031 15:35
सूर्य	27/11/2030 07:36	चंद्र	12/03/2031 07:11	मंगल	07/07/2031 05:45	गुरु	27/08/2031 07:13
चंद्र	07/12/2030 15:58	मंगल	18/03/2031 17:43	राहु	26/07/2031 21:40	शनि	30/08/2031 10:47
मंगल	14/12/2030 21:50	राहु	04/04/2031 07:07	गुरु	13/08/2031 09:08	बुध	02/09/2031 06:23

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : संकटा 5 वर्ष 4 मास 13 दिन

संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष
27/08/1985	**09/01/1991**	**09/01/1992**	**09/01/1994**	**09/01/1997**
09/01/1991	**09/01/1992**	**09/01/1994**	**09/01/1997**	**09/01/2001**
00/00/0000	मंग 19/01/1991	पिंग 19/02/1992	धांय 10/04/1994	भ्राम 20/06/1997
00/00/0000	पिंग 08/02/1991	धांय 20/04/1992	भ्राम 10/08/1994	भद्रि 09/01/1998
27/08/1985	धांय 11/03/1991	भ्राम 10/07/1992	भद्रि 09/01/1995	उल्क 09/09/1998
धांय 18/02/1986	भ्राम 20/04/1991	भद्रि 19/10/1992	उल्क 11/07/1995	सिद्ध 20/06/1999
भ्राम 09/01/1987	भद्रि 10/06/1991	उल्क 18/02/1993	सिद्ध 09/02/1996	संक 10/05/2000
भद्रि 19/02/1988	उल्क 10/08/1991	सिद्ध 10/07/1993	संक 09/10/1996	मंग 20/06/2000
उल्क 20/06/1989	सिद्ध 20/10/1991	संक 19/12/1993	मंग 09/11/1996	पिंग 09/09/2000
सिद्ध 09/01/1991	संक 09/01/1992	मंग 09/01/1994	पिंग 09/01/1997	धांय 09/01/2001

भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष
09/01/2001	**09/01/2006**	**09/01/2012**	**09/01/2019**	**09/01/2027**
09/01/2006	**09/01/2012**	**09/01/2019**	**09/01/2027**	**09/01/2028**
भद्रि 19/09/2001	उल्क 09/01/2007	सिद्ध 20/05/2013	संक 19/10/2020	मंग 19/01/2027
उल्क 21/07/2002	सिद्ध 10/03/2008	संक 10/12/2014	मंग 09/01/2021	पिंग 08/02/2027
सिद्ध 11/07/2003	संक 10/07/2009	मंग 19/02/2015	पिंग 20/06/2021	धांय 11/03/2027
संक 19/08/2004	मंग 09/09/2009	पिंग 11/07/2015	धांय 18/02/2022	भ्राम 20/04/2027
मंग 09/10/2004	पिंग 09/01/2010	धांय 09/02/2016	भ्राम 09/01/2023	भद्रि 10/06/2027
पिंग 19/01/2005	धांय 10/07/2010	भ्राम 19/11/2016	भद्रि 19/02/2024	उल्क 10/08/2027
धांय 20/06/2005	भ्राम 11/03/2011	भद्रि 09/11/2017	उल्क 20/06/2025	सिद्ध 20/10/2027
भ्राम 09/01/2006	भद्रि 09/01/2012	उल्क 09/01/2019	सिद्ध 09/01/2027	संक 09/01/2028

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला : चन्द्र	पिंगला : सूर्य	धान्या : गुरु	भ्रामरी : मंगल
भद्रिका : बुध	उल्का : शनि	सिद्धा : शुक्र	संकटा : राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
09/01/2028		**09/01/2030**		**09/01/2033**		**09/01/2037**		**09/01/2042**	
09/01/2030		**09/01/2033**		**09/01/2037**		**09/01/2042**		**09/01/2048**	
पिंग	19/02/2028	धांय	10/04/2030	भ्राम	20/06/2033	भद्रि	19/09/2037	उल्क	09/01/2043
धांय	20/04/2028	भ्राम	10/08/2030	भद्रि	09/01/2034	उल्क	21/07/2038	सिद्ध	10/03/2044
भ्राम	10/07/2028	भद्रि	09/01/2031	उल्क	09/09/2034	सिद्ध	11/07/2039	संक	10/07/2045
भद्रि	19/10/2028	उल्क	11/07/2031	सिद्ध	20/06/2035	संक	19/08/2040	मंग	09/09/2045
उल्क	18/02/2029	सिद्ध	09/02/2032	संक	10/05/2036	मंग	09/10/2040	पिंग	09/01/2046
सिद्ध	10/07/2029	संक	09/10/2032	मंग	20/06/2036	पिंग	19/01/2041	धांय	10/07/2046
संक	19/12/2029	मंग	09/11/2032	पिंग	09/09/2036	धांय	20/06/2041	भ्राम	11/03/2047
मंग	09/01/2030	पिंग	09/01/2033	धांय	09/01/2037	भ्राम	09/01/2042	भद्रि	09/01/2048

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
09/01/2048		**09/01/2055**		**09/01/2063**		**09/01/2064**		**09/01/2066**	
09/01/2055		**09/01/2063**		**09/01/2064**		**09/01/2066**		**09/01/2069**	
सिद्ध	20/05/2049	संक	19/10/2056	मंग	19/01/2063	पिंग	19/02/2064	धांय	10/04/2066
संक	10/12/2050	मंग	09/01/2057	पिंग	08/02/2063	धांय	20/04/2064	भ्राम	10/08/2066
मंग	19/02/2051	पिंग	20/06/2057	धांय	11/03/2063	भ्राम	10/07/2064	भद्रि	09/01/2067
पिंग	11/07/2051	धांय	18/02/2058	भ्राम	20/04/2063	भद्रि	19/10/2064	उल्क	11/07/2067
धांय	09/02/2052	भ्राम	09/01/2059	भद्रि	10/06/2063	उल्क	18/02/2065	सिद्ध	09/02/2068
भ्राम	19/11/2052	भद्रि	19/02/2060	उल्क	10/08/2063	सिद्ध	10/07/2065	संक	09/10/2068
भद्रि	09/11/2053	उल्क	20/06/2061	सिद्ध	20/10/2063	संक	19/12/2065	मंग	09/11/2068
उल्क	09/01/2055	सिद्ध	09/01/2063	संक	09/01/2064	मंग	09/01/2066	पिंग	09/01/2069

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
09/01/2069		**09/01/2073**		**09/01/2078**		**09/01/2084**		**09/01/2091**	
09/01/2073		**09/01/2078**		**09/01/2084**		**09/01/2091**		**00/00/0000**	
भ्राम	20/06/2069	भद्रि	19/09/2073	उल्क	09/01/2079	सिद्ध	20/05/2085	संक	19/10/2092
भद्रि	09/01/2070	उल्क	21/07/2074	सिद्ध	10/03/2080	संक	10/12/2086	मंग	09/01/2093
उल्क	09/09/2070	सिद्ध	11/07/2075	संक	10/07/2081	मंग	19/02/2087	पिंग	20/06/2093
सिद्ध	20/06/2071	संक	19/08/2076	मंग	09/09/2081	पिंग	11/07/2087	धांय	27/08/2093
संक	10/05/2072	मंग	09/10/2076	पिंग	09/01/2082	धांय	09/02/2088		00/00/0000
मंग	20/06/2072	पिंग	19/01/2077	धांय	10/07/2082	भ्राम	19/11/2088		00/00/0000
पिंग	09/09/2072	धांय	20/06/2077	भ्राम	11/03/2083	भद्रि	09/11/2089		00/00/0000
धांय	09/01/2073	भ्राम	09/01/2078	भद्रि	09/01/2084	उल्क	09/01/2091		00/00/0000

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 4
शत्रु अंक	5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	कन्या, तुला
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	नृसिंह
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	89%	धनार्जन, भाग्योदय, धन
मोती	चंद्र	72%	सन्तति सुख, धनार्जन
नीलम	शनि	69%	धन, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	62%	धन, धनार्जन
पुखराज	गुरु	58%	सन्तति सुख, सुख, दम्पति
गोमेद	राहु	22%	दुर्घटना, हानि
माणिक्य	सूर्य	0%	व्यय
मूंगा	मंगल	0%	हानि, दुर्घटना, पराक्रम हानि

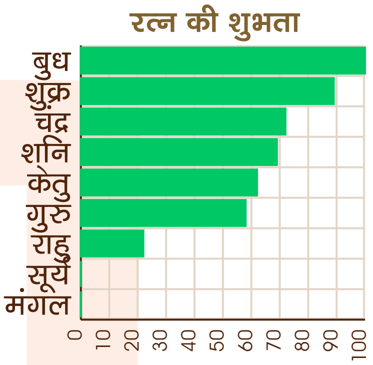

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	06/09/1989	13%	78%	0%	100%	64%	77%	56%	0%	50%
चंद्र	06/09/1999	1%	84%	0%	100%	58%	89%	69%	0%	50%
मंगल	06/09/2006	1%	78%	6%	89%	64%	89%	69%	0%	69%
राहु	05/09/2024	0%	59%	0%	100%	58%	95%	75%	47%	50%
गुरु	05/09/2040	1%	78%	0%	89%	70%	77%	69%	22%	62%
शनि	06/09/2059	0%	59%	0%	100%	58%	95%	81%	34%	50%
बुध	05/09/2076	1%	59%	0%	100%	58%	95%	69%	22%	62%
केतु	06/09/2083	0%	59%	0%	100%	58%	95%	56%	0%	75%
शुक्र	07/09/2103	0%	59%	0%	100%	58%	100%	75%	34%	69%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मोती, नीलम, लहसुनिया एवं पुखराज रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

गोमेद, माणिक्य व मूंगा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंड्ली में बुध एकादश भाव में स्थित है। बुध रत्न पन्ना धारण करना आपके लिए शुभफलदायक रहेगा। पन्ना रत्न प्रभाव से आप ईमानदार और विनम्र स्वभाव के स्वामी बनेंगे। रत्न शुभता से आप अपनी बातों को निभाने का पूरा प्रयास करेंगे। पन्ना रत्न को धारण करने से आप अपने गुणों के कारण लोकप्रिय होंगे। आप कुछ न कुछ नया जानने का प्रयास करेंगे। पन्ना रत्न आपको भाग्यशाली और सुखी बनाएगा। रत्न शुभता आपको सेवकों का सुख और उत्तम वाहनों का सुख देगा। यह रत्न आपको शिल्पकला, लेखन या व्यापार के माध्यम से भी धन देगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं दशमेश है। लग्नेश बुध की शुभता प्राप्ति के लिए आप पन्ना रत्न धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपको बौद्धिक क्षेत्रों से संबंधित कार्यक्षेत्र दे सकता है। रत्न शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में सुख-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। लग्नेश बुध रत्न आपकी विवेक योग्यता को बढ़ाएगा। पन्ने की शुभता से आप में व्यापारिक बुद्धि, लेखन योग्यता का विकास कर सकता है। पन्ना रत्न लग्नेश का रत्न होने के कारण अपनी शुभता से आपको स्वास्थ्य सुख भी प्रदान करेगा। जीवन को आरोग्य रखने में भी पन्ना रत्न आपके लिए शुभ फलदायी रत्न है। पन्ना रत्न आपको गणितीय कौशल भी देगा।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको उदार, सदाचार संपन्न, सुशील और परोपकारी बनाएगा। हीरा रत्न से आप अपने वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्ध होंगे। अनेक वाहनों का सुख आपको यह रत्न दे सकता है। शुक्र रत्न हीरे की शुभता आपको समृद्धि और सम्पन्नता देगी। इस रत्न प्रभाव से नियमित रूप से आपके पास धनागमन होता रहेगा और दिनों दिन धनवृद्धि होती जाएगी।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीय और नवम भाव के स्वामी है।

लग्नेश बुध के मित्र व त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए विशेष शुभ हो गए है। शुक्र की शुभता में बढ़ोतरी करने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपके लिए धन-धान्य, कुटुंब सुख, संचित धन एवं यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। भाग्य, धर्म व दूर स्थानों की यात्रा के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा अवश्य धारण करें। यह रत्न आपका भाग्योदय करेगा। हीरा रत्न धारण से आपकी उन्नति सहज हो सकती है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र पंचम भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न आपको खुशमिजाज बनाएगा। आप मनोरंजन और सुख सुविधाओं की तरफ आकृष्ट होंगे और इन्हें पाने का प्रयास भी करेंगे। रत्न की शुभता से आपकी संतान बहुत अधिक संतुष्ट और प्रसन्नता देने वाले साबित होगी। गुप्त विद्याओं और धार्मिक कार्यो में आपकी रुचि जागृत होगी। दान-पुण्य में आप की सहभागिता बनेंगी। मनोरंजन, खेल और कला से आपका गहरा लगाव रहेगा। मोती रत्न आपका भाग्योदय करेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में चंद्र एकादशेश भाव के स्वामी है। आप चंद्र ग्रह की शुभता प्राप्ति के लिए मोती रत्न धारण कर सकते है। मोती रत्न धारण से आपको धन अर्जित करने के नवीन साधन प्राप्त हो सकते है। यह रत्न धन संचय में सहयोग सिद्ध हो सकता है। इसके साथ ही मोती रत्न आपके बड़े भाई से संबंधों में सुधार करेगा। आयु पर आने वाले असमय संकटों को भी टालने में मोती रत्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह रत्न आपको राजसिक जीवन प्राप्त करने में सहयोग कर सकता है। आय भाव के स्वामी चंद्र का रत्न मोती आपको धन और आय योग्यतानुसार देने में समर्थ है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी,

चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। आपको शनि का रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धनी, कुटुंब तथा लाभवान बनायेगा। आपके पास धनागमन का प्रवाह बना रहेगा। नीलम रत्न आपको सुख संपदा, समृद्धि, मान-प्रतिष्ठा तथा धन की प्राप्ति देगा। यह रत्न आपके पारिवारिक व्यवसाय के लिए भी सुखद फलदायक होगा। यह आपको लघु उद्योग व शिक्षा आदि के क्षेत्रों में भी सफलता देगा। नीलम रत्न पैतृक सम्पति की वृद्धि करेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शनि पंचमेश और षष्ठेश है। शनि त्रिकोण भाव के स्वामी है और लग्नेश बुध के मित्र भी है। अतः नीलम रत्न आपके लिए अनुकूल और शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न धारण करने से आपकी संतान का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। यह रत्न संतान सुख भी प्रदान कर सकता है। नीलम रत्न धारण से आपको विद्या ग्रहण या शैक्षिक क्षेत्र में शुभता प्राप्त हो सकती है। भूमि व संपति से लाभ पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते है। यह रत्न शत्रुओं पर विजय पाने में सहयोगी रत्न सिद्ध हो सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु दूसरे भाव में स्थित है। दूसरे भाव की शुभता प्राप्ति के लिए आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न आपको सरकारी क्षेत्रों के दंड़ से बचाव करेगा। वाणी में दार्शनिकता का भाव लायेगा। यह रत्न आपके रोगों में कमी करेगा।

परिवारिक संबंधों में मधुरता लाने में भी लहसुनिया रत्न शुभ फल प्रदान करेगा। धन बढ़ायेगा। पारिवारिक सुखों को बढ़ायेगा। केतु रत्न लहसुनिया आपके लिए शुभत्व प्रदायक रत्न है।

केतु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र एकादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपको अनेक क्षेत्रों से आय प्राप्ति के स्रोत देगा। यह रत्न आपको विवाद विजयी, विनोदी और स्वाभिमानी बनाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप वाहन आदि से सुखी होंगे। परदेश में यह आपका भाग्योदय करेगा। रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक महत्वकांक्षी हो सकते है। यह रत्न आपको व्यवसायी, सरकार से प्रतिष्ठा एवं व्यावसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। रत्न शुभता आपको अन्न, वस्त्र, अलंकार, धन, पशु, वाहन आदि से सुखी करेगी। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आप धन-धान्य से युक्त होंगे। यह रत्न आपके अंहकार भाव को भी नियंत्रित रखेगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु पंचम भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण आपमें दयालुता और विनम्रता के गुण व्याप्त करेगा। आपकी गिनती बुद्धिमान, पवित्र और श्रेष्ठ व्यक्तियों में होंगी। इस रत्न की शक्तियों से आप चतुर, समझदार और महान कार्य करने वाले बनेंगे। यह रत्न आपके लिए शुभ रत्न है। इसके प्रभाव से आप उत्तम वक्ता, धारा प्रवाह बोलने वाले और कुशल व्याख्याता होंगे। आपकी कल्पनाशक्ति उत्तम होगी। पुखराज रत्न आपको संघर्षो से मुंह न मोडकर विपत्तियों से जूझते रहने की विशेषज्ञता देगा। आपकी न्यायशीलता में वृद्धि होगी।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में गुरु चतुर्थेश और सप्तमेश है। गुरु चतुर्थेश का पुखराज रत्न धारण करने से आपको सुख-सौभाग्य की प्राप्ति हो सकती है। पुखराज रत्न आपको धार्मिक और संस्कारी जीवन साथी दे सकता है। यह रत्न चतुर्थ भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण आपको संपत्ति व माता सुख, विद्या, बुद्धि व संतान पक्ष को सुखी रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। गुरु रत्न पुखराज आपको धनी, भाग्य व धर्म के क्षेत्र में सम्मान दिला सकता है। आप पुखराज रत्न धारण कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहु रत्न गोमेद धारण करने पर आपको जन्म स्थान पर रहने के अवसर कम मिल सकते है। यह रत्न आपको स्वभाव से जल्दबाज और वाचाल बना सकता है। आपकी सहभागिता ऐसे कार्यो में भी हो सकती है जो धार्मिक व सामाजिक न हो। बातचीत में भाषा की शालीनता का उल्लंघन आपके द्वारा हो सकता है। गोमेद रत्न के कारण वृद्ध अवस्था में आप को सुख की कमी का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से धन हानि के योग भी बन रहे है। आपका अधिकांश समय विदेश में व्यतीत हो सकता है।

राहु मेष राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से विदेशी स्रोतों से प्राप्त होने वाली आय बाधित होगी। आपको भाग्योदय के लिए अपने जन्म स्थान से दूर जाना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी दयालुता भाव में भी कमी करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आपके बड़े भाई बहनों की संख्या में कमी हो सकती है। इस कारण आप अपने भाई बहनों में सबसे बड़े हो सकते हैं। रत्न प्रतिकूलता आपके धन में कमी का कारण बन सकती है। चिकित्सा जगत, औजारों, यंत्रों व हथियारों के निर्माण क्षेत्रों में आपकी विशेषज्ञता प्राप्ति बाधित हो सकती है। यह रत्न आपमें यांत्रिकी सम्बंधित ज्ञान की कमी कर रहा है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको धर्मार्थ कार्यो में सुरुचि की कमी हो सकती है। आप दिखावों के लिए अत्यधिक व्यय कर सकते है। यह व्यय परोपकार से हटकर अन्य कार्यो पर हो सकते है। माणिक्य रत्न प्रभाव से व्यय व्यर्थ के कार्यो पर भी अधिक हो सकते है। आंखों के रोग आपको नज़र दोष दे सकते है। आपको चश्में का प्रयोग करना पड़ सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर गेहूं, सोना एवं चांदी इत्यादि क्षेत्रों का चयन आजीविका क्षेत्र के रूप में करने से आपको बचना होगा। इसके अलावा बिजली का काम, कच्चा कोयला या हाथी दांत से जुड़े क्षेत्रों में कार्य करना भी आपके लिए आंशिक रूप से अनुकूल नहीं

रहेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में सूर्य द्वादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको स्वास्थ्य सुख की कमी हो सकती है। यह रत्न आपके धन संचय में कमी करेगा। माणिक्य रत्न धारण से आपके व्ययों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको बन्धु विरोधी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप व्यापार क्षेत्र में विफल हो सकते है। माणिक्य रत्न धारण से आपमें धर्म कार्यो में श्रद्धा से अधिक पाखंड भाव हो सकता है। यह रत्न विदेश में भाग्योदय में विलम्ब देगा। इस रत्न से आपकी दृष्टि मंद हो सकती है। यह रत्न आपके पिता का स्वास्थ्य पीड़ित कर पिता सुख में कमी करेगा। आप पिता के विरोधी हो सकते है। माणिक्य रत्न आपको विदेशगमन में धन का व्यय करा सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा आपको जोखिम पूर्ण क्षेत्रों से आय प्राप्ति के अवसर दे सकता है। आपके बड़े भाई में अत्यधिक क्रोध भाव आ सकता है। आपकी वाणी में कठोरता आ सकती है। मूंगा रत्न आपको संतान से संबंधित परेशानियां दे सकता है। इस रत्न से संतान की पैदाइस में विलम्ब या गर्भपात जैसी स्थितियां भी आ सकती है। आपके बड़े भाई बहन वाद-विवाद में सम्मिलित हो सकते है। मूंगा रत्न आपको मित्रों से मतभेद और विरोध दे सकते है। इस रत्न को धारण करने पर आपके विरोधी प्रबल हो सकते है। आपको रोग, ऋण और शत्रुओं की अधिकता से परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके कुटुंब में वाद-विवाद का कारण बन सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं अष्टमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर पराक्रम भाव आपके काम नहीं आ पाएगा। साहस और जोखिम से काम लेना आपके लिए लाभदायक नहीं रहेगा। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं से पराजित करा सकता है। रत्न प्रभाव से आपमें स्वार्थ भावना प्रवेश कर सकती है। मूंगा रत्न आपको पैतृक सम्पति से वंचित कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपको घर का सुख प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको कठिनता से धन प्राप्त होगा। स्पष्ट वक्ता होने के कारण आपको मित्रों में उचित सम्मान नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको तार्किक बुद्धि देगा। रत्न प्रभाव से आप आलोचनात्मक लेखन की ओर आप अग्रसित हो सकते है। यह रत्न आपको नौकरी में शीघ्र बदलाव दे सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

गुरु
(05/09/2024 - 05/09/2040)

गुरु की दशा में आपका पन्ना, मोती व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, नीलम व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने

हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(05/09/2040 - 06/09/2059)

शनि की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(06/09/2059 - 05/09/2076)

बुध की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, लहसुनिया, मोती व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(05/09/2076 - 06/09/2083)

केतु की दशा में आपका पन्ना, हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, पुखराज व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य, मूंगा व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(06/09/2083 - 07/09/2103)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना, हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, मोती व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न – गोमेद

आपका जन्म कन्या राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह बुध होता है। गोमेद रत्न राहु ग्रह के लिये धारण किया जाता है जो शनि के समान होता है और शनि कन्या राशि के लग्न के जातकों के लिये कारक रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि कन्या लग्न से पंचम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये पंचमेश का प्रबल होना बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि विद्या प्राप्ति के लिए किये गये प्रयास या कार्य के लिये पंचमेश का रत्न धारण करना श्रेष्ठ होता है साथ ही यह प्रेम संबंधों का भाव भी होता है। बुद्धि, बल का आकलन पंचम भाव से देखते हैं। संतान सुख से वंचित जातकों के लिए या संतान होने में देरी होने वाले जातकों के लिये पंचमेश का रत्न संतान सुख में वृद्धि करता है।

अतः कन्या राशि के लग्न वाले जातकों को गोमेद रत्न धारण करके राहु या शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को संतान, बुद्धि, प्रेम संबंध व विद्या से संबंधित सभी लाभ मिलेंगे और जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी राहु या शनि न्याय व आध्यात्म का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को आत्मिक बल की प्राप्ति तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारी व सेवकों का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों की शुभ कामनाऐं भी प्राप्त होती हैं। राहु ग्रह मन की असमंजस स्थिति से दूर करता है। यह दादा-दादी का प्रतिनिधि ग्रह है। उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। जिसको त्वचा संबंधी रोग या कोढ़ जैसी बीमारी भी हो गयी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा संशय की स्थिति में संशय से मुक्ति दिलाता है।

गोमेद को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है तथा राहु ग्रह शनि के समान माना जाता है। गोमेद राहु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। गोमेद को यदि शनिवार के साथ-साथ राहु के नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गोमेद को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, राहु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

राहु का मंत्र – ऊँ रां राहुवे नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि राहु से संबंधित पदार्थ जैसे काले तिल, सरसों का तेल, सवा मीटर नीले कपड़े का दान करें तो गोमेद की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन राहु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सरस्वती जी की आराधना करें तो यह गोमेद की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रतिदिन प्रातःकाल कबूतरों को दाना, चीरियों को आटा व मछलियों को आटे की गोली खिलायें तो और अधिक शुभकारी होगा।

कन्या लग्न वाले जातक यदि गोमेद की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं संतान सुख से परिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रूद्राक्ष

रूद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रूद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रूद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रूद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रूद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रूद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रूद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रूद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कन्या लग्न की है। कन्या लग्न पर बुध का प्रभाव होने से आप अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। आपका व्यक्तित्व ऐसा होता है कि कोई भी सहजता से आपकी ओर आकर्षित हो जाता है। आपका मस्तिष्क अत्यंत रचनात्मक होता है। पृथ्वी तत्त्व होने से जिस प्रकार पृथ्वी सभी को धारण करती है उसी प्रकार आपके अन्दर भी सहनशीलता कूट-कूट कर भरी होती है। वायु प्रकृति होने से आप स्वयं को हर परिस्थिति में ढाल लेते हैं। सभी को माफ करने का स्वभाव, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना एवं समस्याओं का समाधान निकालना की क्षमता आपको विशिष्ठ व्यक्तित्व बनाता है। लग्नेश बुध के कारण भाषा पर अच्छी पकड़ एवं वाणी की कुशलता तथा किसी भी बात का तर्कपूर्ण तथ्य आप चाहते हैं।

कुंडली का 6, 8 व 12 वां भाव त्रिक भाव होने के कारण विशेष अशुभता लिए होते हैं। आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, अष्टमेश व तृतीयेश मंगल तथा द्वादशेश सूर्य हैं। इन भावों की अशुभता आपके जीवन में रोग, ऋण, शत्रु, आयु, बाधाएं, शोक, स्वास्थ्य हानि, अस्पताल, कोर्ट-कचहरी, जेल, व्यय और हानियों का विश्लेषण किया जाता है। त्रिक भाव के स्वामी जिस भाव में जाते हैं, उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश अवश्य करते है। जिसके फलस्वरूप आपको मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं। 6, 8 व 12 भावों में से 8 वां भाव सबसे अधिक दुष्ट/अशुभ होता हैं।

आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, पंचमेश- षष्टेश शनि आपको विद्या, बुद्धि, विवेक, वाणी, संतान, भय, ऋण, रोग, पाप कर्म, संघर्ष, कष्ट, परिश्रम, धैर्य, मामा व ननिहाल पक्ष के लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता हैं।

अष्टमेश व तृतीयेश मंगल आपके पराक्रम, पुरुषार्थ में कमी करता हैं, साथ ही बाहुबल, भाई-बहन के सुखों में कमी, अस्पताल, पुलिस-कोर्ट कचहरी के मामले परेशानियों का कारण बन सकते हैं।

द्वादशेश सूर्य, द्वादश भाव का स्वामी सूर्य नेत्र रोग, व्यय, हानि, सरकारी दंड, कारागार, सम्बन्ध विच्छेद का कारक बन सकता हैं।

आपकी कुंडली में राहु अष्टम भाव में स्थित हैं। आपके पारिवारिक सुखों में कमी, पैतृक संपति नाश, संघर्ष, सौतेली माता से मतभेद, की स्थिति बन सकती हैं। आप अनुचित तरीकों से लाभार्जन करने का प्रयास कर सकते हैं। धन वृद्धि करने के लिए अनैतिक नियमों का सहारा आप ले सकते है। अष्टम भाव में राहु आपके क्रोध भाव में वृद्धि कर रहा हैं, आप को व्यर्थ विषयों पर बातें करने से बचना चाहिए। कुटुम्बियों से त्याज्य एवं अपमानित, कभी लाभ और कभी हानि, निष्ठुर, कई बार हानि पाने वाला तथा स्वजनों से दूर रहने वाला।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन-धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उतम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 7, 8 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्‌भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पङता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पङता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	-------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
साढेसाती तृतीय ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-------------------------	-------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-------------------------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-------------------------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-------------------------	-------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-------------------------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	सुख
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	व्यय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म काल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में सप्तम भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपके मंगल का दोष समाप्त हो जाता है। अतः ऐसे मंगल से आपको शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगा। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में थोड़ी उग्रता अवश्य हो सकती है। मंगल के शुभ प्रभाव से आप जीवन में समस्त प्रकार से सुखऐश्वर्य एवं धन धान्य को अर्जित करेंगे तथा सुख पूर्वक जीवन में इनका उपभोग करेंगे।

इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है परन्तु विवाह में कोई विशेष बाधाएं या समस्याएं उत्पन्न नहीं होंगी। शान्ति पूर्वक आप का विवाह कार्य सम्पन्न होगा। आप दोनों का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। विवाह के पश्चात दाम्पत्य जीवन आनंद पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आपके परस्पर भी सामान्यतया मधुर एवं प्रगाढ़ रहेंगे।

आपकी चन्द्र कुंडली में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः इसके प्रभाव से आप सुयोग्य जीवन साथी प्राप्त करने में सफल रहेंगे। परस्पर अत्यंत ही प्रेम एवं सहयोग का भाव रहेगा जिससे आपका दाम्पत्य जीवन पूर्ण रूप से शांत तथा सुखी रहेगा। इस मंगल की दशम भाव पर दृष्टि होने से आप किसी उच्च पद को प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा समाज में पूर्ण मान सम्मान तथा ख्याति भी अर्जित करेंगे। आपके कार्य क्षेत्र में सर्वदा यथोचित उन्नति होती रहेगी। प्रथम भाव पर मंगल की दृष्टि से शारीरिक स्वास्थ्य तो अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव विद्यमान होगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आप पारिवारिक सुख से सर्वदा युक्त रहेंगे सामान्यतया शान्ति पूर्वक परिवार का पालन करेंगे। विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी आप सफल रहेंगे तथा उच्च शिक्षा प्राप्त करने में भी आप समर्थ होंगे। इस प्रकार आपका जीवन पूर्ण शान्ति तथा सुख से व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसी मंगली कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी चन्द्रकुंडली में मंगल का दोष उचित नियमानुसार भंग हो रहा हो ऐसा उचित मिलान होने पर आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति तथा सफलता अर्जित करेंगे। एक सौभाग्यशाली पुरुष होकर जीवन में धन धान्य एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे। जीवन में आपको किसी भी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव नहीं रहेगा। सभी भौतिक सुखों का आप आनंद पूर्वक उपभोग करेंगे।

इसके अतिरिक्त जिस कन्या की चन्द्रकुंडली में सप्तम भाव में ही मंगल हो उस कन्या से यदि आवश्यक हो तभी विवाह करना चाहिए अन्यथा यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए। क्योंकि समान भाव में स्थित मंगल जीवन साथी के लिए विशेष शुभ नहीं होता तथा दाम्पत्य जीवन में शारीरिक तथा अन्य प्रकार से अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी जिससे आपका सुखी दाम्पत्य जीवन प्रभावित होगा। इसके अतिरिक्त अन्य भावों में यदि मंगल स्थित हो तो वह शुभ फल प्रदान करेगा तथा दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार से अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न नहीं होगी अतः अच्छी तरह सोच विचार कर अन्तिम निर्णय लेना चाहिए जिससे भविष्य में किसी भी प्रकार से परेशानी या असुविधा उत्पन्न न हो।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्‌टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 27 होने से दो और सात के योग द्वारा नौ आपका मूलांक होगा। जिसका अधिष्ठाता ग्रह मंगल है। अंक दो का चन्द्र तथा अंक सात का भारतीय मतानुसार केतु एवं पाश्चात्य मतानुसार नेपच्यून ग्रह है।

मूलांक नौ का स्वामी मंगल एवं उनके ग्रहमण्डल का सेनापति होने से आपके अन्दर सेनापतित्व की भावना अधिक रहेगी। आप बचपन से अन्तिम अवस्था तक मुखिया के रूप में रहना पसन्द करेंगे। ऐसा ही रोजगार का क्षेत्र चुनेंगे, जिसमें आप स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकें। साहस आपके अन्दर कूट-कूट कर भरा होगा तथा साहसिक कार्यों को करने में आपको विशेष आनन्द की अनुभूति होगी। स्वभाव से आप तेज गति वाले, शीघ्रातिशीघ्र कार्य को अंजाम देने वाले तथा जल्दी एवं फुर्ती से सभी कार्यों को संपादित करने वाले व्यक्ति के रूप मे ख्याति अर्जित करेंगे।

साहस आपका मुख्य गुण रहेगा और दुःसाहस अवगुण। कभी-कभी दुःसाहस वश आप अपने जीवन में गहरी चोट भी खायेंगे। अनुशासन पालन करना एवं कराना आपके स्वभाव में रहेगा। इससे आप कठोर हृदय के व्यक्ति कहलायेंगे। लेकिन कोई भी व्यक्ति आपकी खुशामद, चापलूसी करके आपसे वांछित कार्य करा सकता है। अतः इस अवगुण के कारण खुशामदी, चापलूस व्यक्तियों से आप जीवन में कई बार हानि भी उठायेंगे। क्रोध की मात्रा आपके स्वभाव में ज्यादा ही रहेगी। इससे आपको हानियों की संभावनाएं प्रायः बनी रहेगी एवं आपके शत्रुओं, विरोधियों की वृद्धि का कारण आपका क्रोध बनेगा।

अंक दो का स्वामी चद्र एवं सात का नेपच्यून आपकी कल्पना शक्ति, अन्वेषण कार्यों में वृद्धि करेगा। आपको बाग-बगीचे, हरियाली, जंगल, पहाड़ों की सैर करना अच्छा लगेगा।

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहु एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षलग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय अचानक होगा। आपके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करेंगे। आप अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन के हिमायती होंगे एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना आपकी आदत में शुमार होगा। आप रूढ़ि वादिता से थोड़े दूर तथा आधुनिक होंगे।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आपका रूझान रहेगा एवं ऐसे कार्यों को संपादन करने में आनन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझेंगे। आपके कार्यों में विस्फोटकता रहेगी तथा आप अचानक चर्चित होंगे। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार-बार का परिवर्तन आपकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से आपको सबक लेना होगा कि भाग्य आपका परिवर्तनशील है। अतः आपको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यों से दूर रहना या सोच-समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहेगा।

आपका मूलांक 9 है तथा भाग्यांक 4 है। मूलांक 9 का स्वामी मंगल है तथा भाग्यांक 4 का स्वामी हर्षल है। मूलांक 9 एवं भाग्यांक 4 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक एवं भाग्यांक के मिलेजुले फल प्राप्त होंगे। कभी आपका मूलांक साथ देगा, तो कभी आपका भाग्यांक साथ देगा। आप ऐसा ही रोजगार-व्यापार पसंद करेंगे, जिसमें धनार्जन साहस भरे कार्यों से होता रहे। जोखिम भरे कार्य एवं चुनौती से परिपूर्ण कार्यों की ओर आपका स्वाभाविक रुझान रहेगा। आप अपने कार्यक्षेत्र में एक मुखिया की तरह से कार्य संपन्न करेंगे। आपका रुझान विशेष तौर पर ज्ञान-विज्ञान अथवा तकनीकी क्षेत्रों की ओर रहेगा। यदि आप तकनीकी क्षेत्र में कार्य करते हैं, तो आपको उच्च कोटि की सफलताएं प्राप्त होंगी। आप युवा अवस्था से जीविकोपार्जन हेतु धन कमाना प्रारंभ कर देंगे तथा प्रौढ़ावस्था तक आपकी आर्थिक स्थिति काफी अच्छी हो जाएंगी। आपको भूमि-संपदा जीवन के मध्य भाग में प्राप्त होगी एवं आप इनका भरपूर सुख भोगेंगे। आपकी सामाजिक स्थिति अच्छी बनेगी तथा समाज में आपको समयोचित मान-सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी।

आपका भाग्योदय 22 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 31 वर्ष की अवस्था से आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी एवं 40 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 9 की 3 एवं 6 से मित्रता है तथा भाग्यांक 4 की 1 एवं 8 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 6, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे तथा इनसे आपके जीवन में प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितंबर, माह विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब तारीख, दिन, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर दोनों शुभ रहें।

मूलांक 9 एवं भाग्यांक 4 के प्रभाववश, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ विशेष महत्वपूर्ण घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बनेंगी।

Shree Shree 1008 Mahamandleshwar Paramhans Daati Maharaj
Shri Sidh Shakti Peeth Shanidham Trust
Shree Shani Tirth Kshetra Asola, Fatehpur Beri, Chhatterpur, New Delhi 110074

+919871964972, +91981539237, +919116141210, +919116141211
www.shanidham.org, www.facebook.com/shreeshanidham, www.daati.com
Saturnpublicatins@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अर्जित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सटटे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी,

वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया कन्या लग्न में उत्पन्न जातक अध्ययनशील होते हैं तथा विभिन्न विषयों के ज्ञानार्जन में उनकी रूचि रहती है। सदगुणों से वे युक्त रहते हैं परन्तु स्त्रियों के प्रति उनके मन में आकर्षण की प्रबलता रहती है। वे भाग्यशाली भी होते हैं तथा उनके सांसारिक महत्व के कार्य अल्प परिश्रम के द्वारा ही भाग्यबल से सम्पन्न हो जाते हैं फलतः कार्यक्षेत्र में वे उन्नतिशील रहते हैं। उनकी बुद्धि भी तीक्ष्ण होती है तथा कठिन से कठिन विषय को समझने तथा समाधान करने में वे समर्थ रहते हैं। राजनीति में यद्यपि उनकी रूचि अल्प होती है तथापि राजकार्यों में सलाहकार या सचिव अथवा प्रशासनिक क्षेत्र में वे अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त बुद्धि द्वारा संचालित होते हैं तथा भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। अध्ययन के प्रति आपकी रूचि रहेगी तथा कला लेखन मनोविज्ञान या आलोचना आदि के क्षेत्र में आपको इच्छित सफलता प्राप्त होगी। अपनी योग्यता एवं स्वभाव से जीवन में आपको सुखैश्वर्य एवं भौतिक संसाधनों की प्राप्ति होगी। आपकी बुद्धि भी तीव्र होगी एवं गूढ़ से गूढ़ समस्याओं का समाधान करने में समर्थ होंगे।

लग्न में बुध की राशि के प्रभाव से आपका स्वरूप सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से भी प्रसन्न तथा स्वस्थ रहेंगे। आपकी वाणी मधुर एवं ओजस्वी होगी तथा आदर्श वक्ता के रूप में आप जाने जाएंगे। व्यावहारिक रूप से आप अत्यंत ही कुशलता का प्रदर्शन करेंगे जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। कला एवं साहित्य के प्रति आपकी विशेष रूचि होगी तथा लेखन सम्पादन आदि में भी सफलता अर्जित करेंगे। शारीरिक बल की आप में प्रचुरता रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से जीवन में इच्छित धनवैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में सफल होंगे। साथ ही समाज एवं कार्य क्षेत्र में आप प्रतिष्ठित तथा यशस्वी व्यक्ति होंगे।

स्वभाव से आप शांत एवं उदार रहेंगे तथा समय पर अन्य जनों के उपकार करने में भी तत्पर होंगे श्रेष्ठ कार्यों को करने में आपकी हमेशा रूचि रहेगी। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपनी तीव्र बुद्धि के द्वारा कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान करेंगे एवं गूढ़ से गूढ़ विषय को भी आत्मसात करने में सफल होंगे।

धर्म के प्रति आपकी प्रबल आस्था रहेगी तथा समय समय पर श्रद्धापूर्वक धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। अपने इन कार्यों से आपको आत्मिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। इस प्रकार आप अपनी बुद्धिमता योग्यता एवं पराक्रम से अपने महत्वपूर्ण कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे तथा उनमें इच्छित सफलता अर्जित करके शांतिपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म काल में द्वितीय भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है । अतः इसके प्रभाव से आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति एवं समृद्धि से युक्त रहेगा तथा समस्त पारिवारिक जन परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी अत्यंत ही मृदु एवं प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। रहेंगे। प्रौढ़ावस्था में आपको अल्प मात्रा में नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त हो सकते है।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी तथा समय समय पर धार्मिक एवं अन्य शुभ मांगलिक कार्यो को सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही अन्य उत्सवों का आयोजन करने में भी आपकी रूचि रहेगी। जीवन में आपको पैतृक सम्पति की प्राप्ति होगी तथा अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से भी आप वांछित धनऐश्वर्य तथा वैभव अर्जित करेंगे। पारिवारिक जनों को प्रसन्नता तथा सुविधा प्रदान करने के लिए आप हमेशा यत्नशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाज में आप एक आदरणीय पुरूष होंगे तथा सौभाग्य बल से आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही व्यापार संबंधी लाभ भी समय समय पर होता रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शाक्ति प्रबल रहेगी तथा किसी भी वस्तु या विषय को याद करने में दीर्घकाल तक समर्थ रहेंगे। आप एक आत्म विश्वासी, साहसी तथा पराक्रमी पुरुष होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से युक्त होकर समस्त सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको इच्छित सफलता भी प्राप्त होगी। मंगल के प्रभाव से आपकी निर्णय लेने की शक्ति दृढ़ रहेगी तथा मस्तिष्क भी हमेशा सक्रिय एवं सजग रहेगा।

चूंकि मंगल भाई बहिनों तथा भूमि संबंधी जायदाद का कारक है। अतः भाई बहिनों से युक्त रहकर उनका पूर्ण सुख, सहयोग प्राप्त करेंगे तथा वे भी आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे एवं आपके प्रति हमेशा कर्तव्य परायण तथा विश्वसनीय रहेंगे। अतः उनकी गलतियों को आप समय समय पर क्षमा करते रहेंगे। साथ ही भूमि एवं जायदाद आदि से युक्त रहेंगे तथा इससे आपको प्रचुर लाभ तथा सुख प्राप्त होगा। आप एक साहसी तथा पराक्रमी व्यक्ति होंगे अतः परेशानियों, क्रोधावस्था तथा अनावश्यक वाद विवाद आदि के समय स्वयं को नियंत्रित करने में समर्थ रहेंगे। आपकी नेतृत्व.प्रतिभा तथा अन्य सामाजिक गुणों से लोगों के मध्य अपना वर्चस्व बनाएं रखने में सफल रहेंगे। साथ ही संचार संबंधी उपकरणों की भी आपको प्राप्ति होगी एवं सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। संगीत के प्रति भी समय समय पर आप अपनी रूचि का प्रदर्शन करेंगे। दूर समीप की यात्राओं से भी आप लाभ तथा मित्रों को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। परन्तु मित्रों से आपको सतर्क भी रहना चाहिए ।इसके अतिरिक्त आप पराक्रमी कार्यो को सम्पन्न करेंगे तथा अन्य जनों से भी यदाकदा विवाद भी हो सकता है अतः सतर्क रहें।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप समस्त संसारिक एवं भौतिक सुखों को अर्जित करने में सफल होंगे। आधुनिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों से भी युक्त होंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपको यथोचित स्तर बना रहेगा तथा सभी लोग आपको वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आपको काफी चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व प्राप्त होगा। मामा के प्रभाव या सहयोग से भी आपको काफी धन सम्पत्ति मिल सकती है। आप स्वपराक्रम परिश्रम एवं बुद्धिमता से चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको चल सम्पत्ति से शीघ्र लाभ होगा अतः इसके लिए आप समयानुसार पूंजी निवेश कर सकते हैं।

आपका आवास उत्तम होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त रहेगा। समस्त भौतिक उपकरणों की इसमें प्रबलता रहेगी। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे एवं आपसी संबंधों में भी अनुकूलता होगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा युवावस्था के बाद अपने वाहन का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी माता जी शिक्षित, बुद्धिमान एवं हास्य प्रिय महिला होंगी तथा अपने हास्यप्रिय स्वभाव से सभी को प्रसन्न तथा प्रभावित करेंगी। परिवार का वह पूर्ण लालन-पालन करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी सदस्य को कोई भी कष्ट नहीं होने देंगी। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे तथा मान-सम्मान भी प्रदान करेंगे।, आपके प्रति उनका विशिष्ट स्नेह भाव होगा एवं आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आपको समय समय पर उनसे वांछित आर्थिक सहयोग भी मिलता रहेगा। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपके आपसी संबंधों में मधुरता का भाव विद्यमान होगा।

लग्नेश बुध की स्थिति के प्रभाव से आप प्रारंभ से ही एक अध्ययनशील व्यक्ति होंगे तथा अपनी प्रारंभिक कक्षाओं से ही परीक्षाओं में अच्छे अंक अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा भी अच्छे अंको से ससम्मान उतीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव की वृद्धि होगी तथा भविष्य भी उज्ज्वल बनेगा। स्वजनों एवं मित्रवर्ग से आपको पूर्ण प्रोत्साहन तथा सम्मान मिलेगा। इससे अतिरिक्त आप न्याय संबंधित शिक्षा में इच्छित सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। तथा बृहस्पति भी अपनी नीच राशि में पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से यद्यपि आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने कार्य कलापों को समान्यतया बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करेंगे लेकिन किसी समस्या के शीघ्र समाधान में अपने आप को असमर्थ सा महसूस करेंगे। आप में शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता भी कम ही होगी तथापि शुभ ग्रह की नीचराशिस्थ स्थिति से विलम्ब से ही सही सकारात्मक निर्णय लेने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन के प्रति आपकी न्यूनाधिक मात्रा में रुचि होगी। आधुनिक बौद्धिक विषयों में भी आप रुचिशील होंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करके अपनी विद्वता में बृद्धि करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचमभाव में नीचस्थ बृहस्पति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगो में भी आपकी रुचि होगी तथा मनोरंजन एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए आप ऐसे सम्बन्धों को स्थापित करने के इच्छुक होंगे लेकिन आपको ऐसे प्रसंगों में मर्यादा तथा नैतिकता का यत्नपूर्वक पालन करना चाहिए अन्यथा इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

बृहस्पति की नीचस्थ स्थिति पंचमभाव में होने के कारण आपको सन्तति प्राप्ति में किंचित विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है लेकिन सन्तति प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी सन्तति तेजस्वी, पराक्रमी एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में उन्नति तथा सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथापि यदा-कदा वे अपनी मर्जी के कार्य कर सकते है तथा माता-पिता की आज्ञा-पालन में उपेक्षा कर सकते है। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में उनकी सलाह एवं सहयोग भी अल्प मात्रा में लेंगे। लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे आपसी सम्बन्धों में सदभाव एवं विश्वास बना रहेगा। इसके अतिरिक्त बच्चों से आपको वृद्धावस्था में विशेष अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए तथा अपने लिए यथोचित धन आदि संचित करके रखना चाहिए।

अध्ययन की दृष्टि से आपकी सन्तति परिश्रमी होगी तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से सन्तोष जनक प्रगति करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा आधुनिक परिवेश प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त यदा-कदा बच्चे अन्य सामाजिक जनों से वाद-विवाद भी कर सकते हैं जिससे आपको परेशानी की अनुभुति होगी परन्तु अपने सद्व्यवहार से आप इसे सुलझाने में समर्थ होंगे। इस प्रकार सन्तति सुख आपका मध्यम ही होगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कुम्भराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आयु भी दीर्घ होगी। आप एक दयालु तथा सद्प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे परन्तु कभी कभी अपने वार्तालाप में कठोर शब्दों का भी प्रयोग कर सकते हैं। इससे कई लोग आपसे विरोध की भावना रखेंगे। साथ ही लोग आपकी खुशहाली तथा वैभव से ईर्ष्या के कारण भी आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे। यद्यपि आप उच्च मान सम्मान प्राप्त करेंगे परन्तु आपका विरोध भी प्रबल रहेगा। आप अपने पारिवारिक सदस्यों पर अत्यधिक व्यय करेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है। इससे यदा कदा ऋण मुक्ति में विलम्ब के कारण सम्बन्धित व्यक्ति से आपकी शत्रुता होने की संभावना रहेगी लेकिन अपनी प्रतिभा तथा अधिकार के बल पर आप इन समस्याओं पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।

आपके नौकर आज्ञाकारी होंगे तथा ईमानदारी से आपकी सेवा करते रहेंगे तथा अपने कार्य से आपको वे सन्तुष्ट रखेंगे लेकिन यदा कदा इनसे सामान्य हानि की संभावना रहेगी अतः सतर्क रहना चाहिए। मुकद्दमे आदि के कार्यो में आप लापरवाह रहेंगे। अतः आपको ऐसे मामलों का सावधानी पूर्वक अवलोकन करना चाहिए तथा अपने हिसाब को सही रखना चाहिए। इस प्रकार यदि आप सावधानी पूर्वक अपने इन कार्यो को सम्पन्न करेंगे तो आपको किंचित इसमें विजय प्राप्त होगी। साथ ही फौजदारी मामलों में आप सफलता अर्जित करेंगे।

आपके मामा मामियों से संबंध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे प्रत्यक्ष रूप से वे आपके प्रति अपनत्व की भावना का प्रदर्शन करेंगे परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उनकी आपके लाभ या सहयोग में कोई रूचि नहीं रहेगी अतः संबंधों में मधुरता रखने के लिए बुद्धिमता का प्रयोग करें इसके अतिरिक्त आप वृद्धावस्था में उदर या गुर्दे संबन्धी परेशानी से भी पीड़ित हो सकते हैं। अतः खान पान संबंधी परहेज भी रखना चाहिये।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है सामान्यतया सप्तम भाव में मीन राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील वात कफ प्रकृति वाला आस्तिक एवं धनवान होता है। वह स्वभाव से सौम्य , कर्तव्य परायण एवं सांसारिक कार्यो में दक्ष होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील होंगी तथा स्वभाव से सौम्य रहेगी। सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में वह बुद्धिमता का प्रर्दशन करेंगी जिससे यथा समय कार्य पूर्ण होंगे ।साथ ही कर्तव्य परायणता के भाव से भी युक्त होंगी।

आपकी पत्नी का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा कद भी सामान्य रहेगा साथ ही शारीरिक संरचना उनकी आकर्षक होगी तथा अंग प्रत्यंग भी सुडौलएवं पुष्ट होंगे जिससे उनके व्यक्तित्व एवं सौन्दर्य के आकर्षण में वृद्धि होगी। सौन्दर्य की वृद्धि के लिए समयानुसार आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रयोग करेंगी। कला एवं संगीत में उनकी रूचि होगी तथा इस पर अपना समय भी व्यतीत करेंगी इसके अतिरिक्त भौतिक एवं संदर वस्तुओं के प्रति भी उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह विज्ञापन के द्वारा सम्पन्न होगा या आप स्वेच्छा से प्रेम विवाह भी सम्पन्न कर सकते है विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी होगा एवं एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं सम्मान की भावना रहेगी साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में सम्पन्न होगा तथा विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पति की प्राप्ति होगी एवं अन्यत्र से भी बहुमूल्य उपकरण तथा वस्तुएं उपहार में मिलेंगी। सास ससुर के साथ में आपके औपचारिक संबंध बने रहेंगे तथा विवाह के बाद भी उनसे नैतिक तथा अन्य प्रकार का सहयोग मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव अनुकूल रहेगा तथा वह सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननदों को प्रभावित तथा सन्तुष्ट रखने में समर्थ रहेंगी।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा लाभ एवं उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपका ज्यौतिष या तंत्र मंत्र अथवा आध्यात्मिकता के प्रति विशेष रूचि या श्रद्धा नहीं रहेगी। इसका मुख्य कारण यह होगा कि आप अपने कार्य क्षेत्र में व्यस्त रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगे। साथ ही अन्यत्र भी अपने कार्य कलापों में संलग्न रहेंगे जिससे आपके पास समयाभाव रहेगा। यदि आपके पास समय बचा तो आप इसको खेल आदि में व्यतीत करना अधिक उचित समझेंगे। लेकिन यदा कदा आध्यत्म संबन्धी प्रवचनों का श्रवण कर सकते हैं। आप पैतृक सम्पत्ति से जीवन में लाभ अवश्य अर्जित करेंगे। आप एक भाग्यवान पुरूष होंगे तथा विस्तृत जमीन जायदाद के स्वामी बनेंगे। यदि आप इसे बेचना भी चाहेंगे तो इसमें आपको मनोवांछित लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही दिन पर दिन इसकी कीमत में वृद्धि होगी। अतः आप इच्छित कीमत पर इसे बेचकर प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे ।

आप शादी के समय दहेज या अन्य प्रकार के उपहारों को इच्छित मात्रा में प्राप्त करेंगे। यद्यपि आपके स्तर के अनुसार इसमें प्रचुरता नहीं होगी फिर भी इसके द्वारा आप अपने रहन सहन आदि के स्तर में वृद्धि करने में समर्थ सिद्ध होंगे। बीमा आदि से भी आपको लाभ होगा तथा समय समय पर स्वयं का तथा अन्य वस्तुओं यथा वाहन मकान आदि का भी बीमा करवाएंगे। आपकी कुडंली में घर में चोरी या डकैती के कोई योग नहीं बनते है। यदि ऐसी घटनाएं हो जाएं तो वह सामान्य होगी तथा तथा इसमें चिन्ता करने की कोई बात नहीं होगी क्योंकि आप बहुमूल्य वस्तुओं को पहले ही सुरक्षित स्थान पर रख देंगे। आपकी आयु लम्बी रहेगी तथा सामान्यतया आनन्द पूर्वक समय व्यतीत करेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा यह धार्मिकता आपको पैतृक एवं पारिवारिक संस्कारों के रूप में प्राप्त होगी। धार्मिक कार्य कलापों को आप श्रद्धा पूर्वक सम्पन्न करेंगे तथा दैनिक पूजा के प्रति भी रूचिशील रहेंगे। यद्यपि युवावस्था में आप दैनिक पूजा अल्प मात्रा में ही सम्पन्न कर पाएंगे। लेकिन ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था विद्यमान रहेगी। आप आध्यात्म तथा ध्यान योग के प्रति पूर्ण इच्छुक रहेंगे तथा उपरोक्त विषयों के ग्रंथों का रूचिपूर्वक अध्ययन करके ज्ञानार्जित करेंगे। आपकी अर्न्तप्रज्ञा शक्ति भी उत्तम रहेगी तथा ज्यौतिष तंत्र मंत्र या हस्तविज्ञान का आपको उत्तम ज्ञान रहेगा या इनके प्रति श्रद्धा रहेगी तथा आपकी अधिकाशं भविष्यवाणियां सही होंगी। अन्तर्प्रज्ञा की वृद्धि के लिए आप समय समय पर ध्यान या पूजा का विशिष्ट आयोजन करेंगे।

आप उच्च शिक्षा अर्जित करेंगे तथा इसके द्वारा आपको समाज में मान सम्मान तथा कीर्ति प्राप्त होगी। साथ ही तीर्थ स्थानों की शुभ यात्राएं करने में भी इच्छुक रहेंगे तथा इन यात्राओं से लाभ ज्ञान तथा सम्मान अर्जित होगा। वैदिक साहित्य में भी आपकी रूचि रहेगी तथा वृद्धावस्था में अपना अधिकांश समय भजन कीर्तन में व्यतीत करेंगे। आपको वैभव शाली तथा विश्राम पूर्ण जीवन व्यतीत करना अच्छा लगेगा। साथ ही अपने परिश्रम एवं सौभाग्य से ऐश्वर्य पूर्ण जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे। आपको अपने पौत्रों के द्वारा सुख सहयोग एवं आनंद की प्राप्ति होगी। वास्तव में आप ने पूर्व जन्म में कई पुण्य के कार्य किए जिससे आपका यह जीवन सर्व सम्पति से युक्त होकर व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आप दीनों की सहायता करने वाले दानी, सर्व अलंकारों से युक्त तथा अतिथि सेवा में तत्पर रहकर धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। मिथुन राशि वायु तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही आप किसी स्वतंत्र कार्य करने के इच्छुक होंगे तथा इसमें सामयिक परिवर्तन भी करेंगे जिससे वांछित लाभ के प्रबल योग बनेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षक या व्यख्याता, अनुष्ठान कार्य, धर्मोपदेशक प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर, सरकारी विभाग में सचिव, सलाहकार तथा प्रशासानिक क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः यदि आप आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते है तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए सुवर्ण आदि धातु व्यापार, शेयर क्रय विक्रय का कार्य, वित्तीय संस्था द्वारा, ब्याज द्वारा आप वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके साथ ही कम्पनी के स्वामित्व, वकील का स्वतंत्र व्यवसाय तथा किसी संस्था के स्वामित्व से भी आपको इच्छित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता बिना किसी समस्याओं एवं व्यवधानों के प्राप्त करना चाहते है तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी सफल होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको वांछित आदर प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक या शैक्षणिक संस्था में किसी सम्मानित पदाधिकारी के रूप में भी कार्य कर सकते हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

आपके पिता जी शिक्षित विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के मध्य उनका पूर्ण आदर रहेगा एवं लोगों को वे अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा का उच्चस्तर पर समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा तथा इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी। आप भी अपने बुद्धिमतापूर्ण उत्तम कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे साथ ही सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी विद्यमान होगी जिससे आप सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा उचित मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ रहेंगे तथा आर्थिक क्षेत्र में भी सौभाग्यशाली रहेंगे। माता के द्वारा या सहयोग से आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त करेंगे। साथ ही समुद्र से उत्पन्न पदार्थो या रत्न आदि के अतिरिक्त कार्य से भी आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन में कई प्रकार की इच्छाएं विद्यमान रहेंगी जिसको जीवन में पूर्ण करने में भी समर्थ रहेंगे।

आपकी कुंडली के अनुसार ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी। माता की ओर से भी आपको उचित स्नेह मिलेगा तथा उनकी कृपा दृष्टि हमेशा आपके ऊपर बनी रहेगी। आपकी मित्रता का क्षेत्र भी अच्छा रहेगा तथा मित्रों के मध्य आप सम्मानीय प्रतिष्ठित तथा ख्याति प्राप्त रहेंगे। साथ ही आपके सभी मित्र गुणवान शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे अवस्था के साथ साथ समाज, मित्र मंडल एवं अन्य जनों के लिए आपके मन में अपनत्व की भावना उत्पन्न होगी तथा अपनी ओर से उन्हें आप पूर्ण स्नेह देंगे। साथ ही अवसरानुकूल उनकी सहायता के लिए भी तत्पर रहेंगे। आप पारिवारिक व्यक्ति होंगे तथा घर में परिवार के साथ अतिरिक्त समय व्यतीत करना आपको अच्छा लगेगा। साथ ही सामाजिक सम्मान एवं ख्याति के भी योग बनते है जीवन में यदा कदा कार्य क्षेत्र में आपको परेशानी हो सकती है परन्तु सामान्य जीवन सुख एवं आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आपका व्यापार सुदृढ़ रहेगा तथा भूमि से संबंधित उत्पादों से आपको आर्थिक लाभ होता रहेगा। आप शीघ्रातिशीघ्र धनवान होने की मन में इच्छा करेंगे अतः उद्देश्य की पूति के लिए अत्यंत ही परिश्रम करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आप अत्यधिक सतर्क रहेंगे तथा पैसा कहां से आकर कहां जा रहा है इसका पूर्ण ध्यान रखेंगे। अतः प्रायः शुभ व्यय ही करेंगे एवं वह भी अत्यधिक सोच विचार के बाद। इस प्रवृति से आप पूंजीनिवेश में अधिक धन लगाएंगे तथा बचत भी बनी रहेगी। इस प्रकार आप मध्यमवस्था तक एक धनवान पुरूष के रूप में समाज के मध्य अपने आपको स्थापित करने में समर्थ हो सकेंगे।

आपके पास धन हमेशा रहेगा तथा बैंक में आपकी स्थिति सम्माननीय रहेगी। आपके पास व्यसन अल्प मात्रा में ही होंगे जिससे अनावश्यक व्यय से हमेशा सुरक्षित रहेंगे परिवार के प्रति आप अपनी पूर्ण जिम्मेदारी समझेंगे तथा उनकी सुख सुविधाओं के लिए समय समय पर आवश्यक व्यय करेंगे। साथ ही बच्चों का रहन सहन, खान पान एवं पठन पाठन पर भी विशेष व्यय करेंगे।

आपको यात्रा करना रूचिकर लगेगा वैसे भी आपकी भ्रमण प्रिय प्रवृति रहेगी। आपकी यात्राएं व्यवसाय से ही सम्बन्धित होंगी। साथ ही यदाकदा धूमने के लिए या दर्शनीय स्थानों की सैर के लिए भी आप सपरिवार यात्राएं सम्पन्न कर सकते है। इसके अतिरिक्त जीवन में एक बार आप विदेश भ्रमण पर जाएंगे यात्राओं से आपको लाभ एवं सफलता प्राप्त होगी। इस प्रकार प्रसन्नता पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु षष्ठ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु दशम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि मेंएकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा परिणाम देने वाला रहेगा। इस वर्ष आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना बनाएंगे। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नतिहो सकती है या इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपकोजीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा। आप अपने भौतिक सुख सुबिधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

02 जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकारुका हुआ धन मिल सकता है साथ ही आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप अपनी संचित पूंजी बढ़ाने के लिए निवेश भी करेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

02 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में भी सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। यदि आप विवाहित हैं तो आपके जीवनसाथी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप सामाजिक कल्याण के

लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।02 जूनके बाद पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने है। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। 31 अक्टूबर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। उस समय उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहींरहेंगे। वर्ष के पुर्वार्द्ध में लग्न स्थान पर शनि के दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी परेशानियां होती रहेंगीपरन्तु गुरु के गोचरोपरान्त सब कुछ अनुकूल हो जाएगा।

02 जून के बाद गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करेंगे। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहेंगे। 31 अक्टूबर के बाद आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। छठे स्थान के राहु आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता दिलाएंगे। जो व्यक्ति नौकरी की तालाश में हैं उनको इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्य ार्थियो के लिए समय अच्छा है। तकनीकि शिक्षा के लिए भी वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी जन्म स्थल की यात्रा होगी। परिजनों साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राएंहोती रहेंगी। द्वादश स्थान पर राहु एवं केतु ग्रह के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्राद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थभाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद दान पुण्य अधिक करेंगे।

- श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं। जिससे आपकी आर्थिक उन्नति व समाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं सप्तम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष पंचम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः उत्तम रहेगा। आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ गुरु आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुचाएंगे। बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा, जिसका लाभ उठा कर आप व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं, तो बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिलेगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वालों का स्थान परिवर्तन हो सकता है।

जून के बाद आपका समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें उत्पन्नकरेंगे। सकारात्मक सोच व आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़े क्योंकि वर्षान्त में शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाइयों का मुख्य योगदान होगा। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिलने की सम्भावना है, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय प्रभावित हो सकता है।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाईयों का सहयोग मिलता रहेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि

होगी। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

जून के बाद गूरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपने वौद्धिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों कोस्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा बच्चों की उन्नति में अवरोध पैदा होगा।

जून के बाद पंचमस्थ राहु के प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे फलस्वरूप उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद आपके दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है, परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी ही स्वस्थ भी हो जाएंगे।

26 जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। उस समय मौसम जनित बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसम सम्बन्धित बीमारियां घेर सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 21 नवम्बर के बाद स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी शिक्षा में रुकावट आ सकती है। आलस्य की भावना आपकी शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

26 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को अभी और इंतजार करना पड़ सकता है। 26 नवम्बर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध मे छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी, परन्तु 26 जून के बाद द्वादश स्थान के गुरु आप को विदेश यात्रा भी करा सकते है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा के भक्ति या मन्त्र पाठ में रूचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होने से दान-पुण्य की मनोभावना उत्पन्न होगी।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में बहुत लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके कार्य व्यवसाय में व्यवधान आ सकता है। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरु हो जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपको कार्यों में सफलता मिल सकती है। चतुर्थस्थ राहु के कारण नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धन संपत्ति

फरवरी के बाद आर्थिक उन्नति के लिए समय उत्तम नहीं रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इन सब के बावजूद आपका पैसा भी खो सकता है। किसी को उधान पैसा न दें। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। रुका हुआ धन वापस मिल सकता है जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु होगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण भौतिक सुख-सुविधाओं पर भी आपका खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में पारिवारिक माहौल उत्तम रहेगा परन्तु फरवरी के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके वैचारिक मतभेद होंगे। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है।

24 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का

विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

पंचमस्थ राहु के प्रभाव से वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्ष के प्रारम्भ से ही संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित कोई लापरवाही न करें। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है।

24 जुलाई के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे की शिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता में वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फरवरी के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से स्वास्थ्य में अचानक उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह, पेट संबंधित एवं मौसमजनित बीमारियों के कारण ज्यादा परेशान हो सकते हैं। कभी कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद बीमार जैसा अनुभव होगा।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें। आपकी धर्मपत्नी आपकी सेहत का पूरा ध्यान रखेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। फरवरी के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

24 जुलाई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। फरवरी के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। जलीय क्षेत्र की यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

24 जुलाई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्योंकि अष्टम स्थान में शनि का गोचर यात्रा में व्यवधान उत्पन्न करता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं लग्न भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष की शुरुआत कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगी। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यो में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार कार्य करते रहें।

25 अगस्त से समय काफी अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में आपका भाग्य साथ देगा। लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी। आय के स्रोतों में निरंतरता बनी रहेगी। मांगलिक कार्यों में भी आप व्यय करेंगे । चतुर्थस्थ राहु के कारण माता या आपके स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ हो सकता है।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक समय काफी अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल आपके रुके हुए पैसे या फसे हुए पैसे मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। सितम्बर के बाद कोई बड़ा निवेश न करें। विशेष कर जमीन जायदाद में। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सदस्य संख्या में वद्धि होगी। आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। 29 मार्च से पारिवारिक माहौल बिगड़ सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ मानसिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते है।

25 अगस्त के बाद पारिवारिक वातावरण फिर से अनुकूल हो जाएगा और आपको परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का राहु माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उनके खान पान पर ध्यान दें। आप सामाजिक गतिविधियों में कम भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि भर्गाधान के लिए उत्तम योग बना रही है। नवविवाहित महिलाओं के लिए संतानोत्पति का सुन्दर समय चल रहा है।

25 अगस्त के बाद संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे। मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में अष्टमस्थ शनि एवं लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित होता रहेगा। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार आएगा। आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

05 अक्टूबर से फिर से स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। 29 मार्च के बाद व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम रहेगा।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकता है। आपके लिए रोजगार के नये-नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में विदेश यात्रा हो सकते हैं। 29 मार्च के बाद नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण आपके जन्म स्थल से दुर की लम्ब यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 29 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। 05 अक्टूबर के बाद नवमस्थ शनि के प्रभाव से धार्मिक यात्रा भी करेंगे। आपकी रुचि धार्मिक कार्यों के प्रति और बढ़ जाएगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आ सकता है, परन्तु 17 अप्रैल के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। यह समय आपके व्यापार में कुछ बड़ी उपलब्धियां लेकर आएगा।

पूर्ण रूप से यह वर्ष आपके लिए हितकर ही रहेगा। कार्यस्थल में भी आपका प्रदर्शन अच्छा रहेगा। जो लोग रोजगार के लिए परेशान है उन्हें जल्द ही सुखद समाचार मिलेगा। 23 सितम्बर से आप अपने काम को लेकर उत्साहित रहेंगे और अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए अथक प्रयास व मेहनत करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको मनचाहा परिणाम मिलेगा। आपको केवल अपनी एकाग्रता बनाए रखनी है और फिर देखिए यह साल आपके लिए कितना लाभदायक होता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम नहीं रहेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल करने में आपका व्यय होगा परन्तु अप्रैल के बाद व्यापारिक अनुकूलता के चलते आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में भी सफल रहेंगे

गुरु एवं राहु की युति प्रभाव के चलते फरवरी से अप्रैल तक आप को बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा। आने वाले महीनों में आपको निश्चित ही लाभ होगा। व्यवसायियों को व्यवसाय का विस्तार करने के लिए अवसर मिलेंगे। इस साल आप जमीन-जायदाद पर भी खर्च कर सकते हैं। यदि आप पिछले कई महीनों से घर लेने की सोच रहे हैं तो आप अपनी इस योजना को पूरा कर सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ नहीं है। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। राहु ग्रह

का गोचर आपके भाईयों के लिए भी अच्छा नहीं है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

01 मई से सामाजिक एवं पारिवारिक दोनों पक्षों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे। आपकी सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से अप्रैल तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति आपकी संतान के लिए अच्छी नहीं है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं।

मई से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधों में मधुरता आएगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं है।

स्वास्थ्य

वर्ष की प्रारम्भिक तिमाही छोड़ दें तो पूरे वर्ष आप स्वस्थ रहेंगे। आप मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों से स्वस्थ रहेंगे अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए आप नियमित रूप से व्यायाम या योगा करते रहेंगे जिससे आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता रहेगा।

कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें। 23 सितम्बर के बाद अपने खान-पान पर अधिक ध्यान दें और आलस्य न करें। यह आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 17 अप्रैल के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

01 मई से विद्यार्थियों का नये तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व टेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी यात्राओं

के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है। विदेश यात्रा के भी योग हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ को भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि पर ज्यादा विश्वास करेंगे। तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्ध के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपके सहयोगी और अधिकारी भी प्रभावित होंगे। अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करेंगे। आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी।

बेरोजगार युवकों को अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। 15 अक्टूबर के बाद आपको रोजगार सम्बंधित सुखद समाचार मिलने शुरु हो जाएंगे और आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्य की तरफ पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक तौर पर यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी लाएगा। हालाँकि जिस तरह के चपल और बुद्धिजीवी व्यक्ति आप है, इन चनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। 18 फरवरी के बाद आप भूमि, भवन एवं वाहनादि पर भी अच्छा निवेश करेंगे। इस समय के अंतराल में आप इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि भविष्य में किए जाने वाले निवेशों से लाभ किस प्रकार पाया जाए। एक सही योजना बना कर आप निवेश से लाभान्वित हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कोई खोया हुआ जरूरी दस्तावेज भी मिल सकता है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा। हर प्रकार की आर्थिक परेशानियां तुरंत ही दूर हो जाएंगी। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से परिजनों के स्वास्थ्य के ऊपर भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष कम अनुकूल है। द्वितीय स्थान के मंगल पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य

बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। आपके पिता के लिए समय अनुकूल नहीं है।

गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। आपकी माता के लिए समय काफी शुभ है। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपका सामाजिक स्तर बढ़ेगा। मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष के शुरु में संतान के लिए समय अच्छा है। आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

9 अगस्त के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। उस समय बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में बृद्धि होगी। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं। तो यह समय श्रेष्ठ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल बना रहेगा। पूरा साल आप तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे। क्योंकि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलना एवं व्यायाम आदि।

यदि आलस्य ने आपके अन्दर घर बना लिया तो आपका स्वास्थ्य एक चिंताजनक विषय बन सकता है। इसलिए आपके लिए खास सलाह है कि आप एकाग्रता से अपने भीतर एक सशक्त भाव उत्पन्न करें और अपने स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान दें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। 18 फरवरी के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये सयम बहुत शुभ है।

विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय काफी शुभ है यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 18 फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थार पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को भी चरितार्थ करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दे एवं प्रणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं नवम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रहीहै। 5 मार्च से कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा।राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

12 अगस्त से व्यावसायिक स्तर आपके लिए काफी हितकारी होने वाला है। आपको आपकी पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए भी पुरुस्कृत किया जाएगा। साथ ही आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु आर्थिक उन्नति में रूकावटें डाल सकते हैं। आय की राह में रोड़ा खड़ा करसकते हैं। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीको पर अंकुश लगाएं। 5 मार्च के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है।धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

12 अगस्त से आर्थिक स्थिति के लिए समय और बढ़िया हो रहा है। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। चतुर्थस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप के सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपुर्ण योगदान

होगा क्योंकि आप भी बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। आपके माता पिता के लिए समय काफी शुभ है।

द्वितीयस्थ राहु के कारण आपके परिवार में किंचित परेशानी आ सकती है परन्तु आप उन नकारात्मक परिस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। 23 अक्तूबर के बाद परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए सामान्य रहेगा। 5 मार्च के बाद शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे परन्तु 5 मार्च से लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी। आप अपने दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे।

12 अगस्त से आप प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। 23 अक्तूबर से आप अपनी दिनचर्या बहुत सशक्त रखेंगे और व्यायाम भी करेंगे जिससे अपने आपको आरोग्य व तंदरूस्त महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी ये समय बहुत शुभ है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार शुरू करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

शनि के गोचर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। 5 मार्च के

बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के चलते आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

23 अक्तूबर के बाद नौकरी वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्य अधिक होते रहेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी।

- तांबे के लोटे से प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं एवं गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष के प्रारम्भ के तीन माह श्रेष्ठ रहेंगे। आप अपने व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। 18 मार्च के बाद दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। परन्तु व्यापारिक व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो आपका साझेदार धोखा दे सकता है। उसके साथ संबंध खराब हो सकते हैं। आप अपने अनुभवों से खुद का विकास करेंगे। आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इसमें आपको सफलता भी मिलेगा। 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको क्रय-विक्रय के मामले में सावधान रहना चाहिए। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकती है।

8 अक्टूबर से मंगल ग्रह का गोचर आपके आय के स्रोत में बढोत्तरी करेगा। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। कार्य व्यवसाय में भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा। जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका घरेलू माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। धर्मपत्नी के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा। 18 मार्च के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

8 अक्टूबर के बाद आपके छोटे भाई-बहनों के लिए यह समय काफी शुभ हो रहा है। सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। लोग आपका सम्मान करेंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे कुछ ऐसे काम करेंगे, जिससे आप उन पर अभिमान करेंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से संतान संबंधित चिंताएं हो सकती हैं। पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल कर सकती है। जिससे कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। अतः उस समय अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप उनका तुला दान भी करा सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक अनुकूलता बनाए रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। परन्तु 18 मार्च के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्नस्थ राहु के कारण मानसिक अशान्ति व आलस्य की भावना उत्पन्न होती रहेगी। अपने खान-पान एवं दिनचर्या को सुदृढ़ रखें।

सारे ग्रह प्रतिकूल होने से आप अत्यधिक उद्वेग व मानसिक चिंता से ग्रस्त रहेंगे। शत्रुओं से सावधानी भी हितकारी रहेगी। मुख रोग, नेत्र विकार आपका शारीरिक कष्ट बढ़ा सकते हैं। अपने क्रोध, हठ, जिद व अहं भाव का त्याग करें। कार्य को स्वास्थ्य से अधिक अहमियत न दें। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को और उत्तम बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यापारिक व्यक्ति इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो अच्छा लाभ मिलेगा।

यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 18 मार्च से समय आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

18 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यात्रा के अंतराल में किसी से मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। परन्तु द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की दृष्टि होने के कारण आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधु, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें या दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं एकादश स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से समय बहुत उत्तम हो रहा है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। दशमस्थ शनि आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न करेगा। यही आपके व्यवसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा और बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

जुलाई के बाद समय और भी ज्यादा अनुकूल हो रहा है। व्यापारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। यदि आप ब्याज पर भी पैसे देते हैं तो भी अच्छा लाभ होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त जो लोग शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं या इससे संबंधित क्षेत्र में उनका पैसा लगा है उनको भी बेहतर मुनाफा होगा।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो आपकी आर्थिक स्थिति बेहद ही शानदार रहने वाली है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। जिन्दगी के इस सुनहरे पल का भरपूर आनंद लें और अपने कार्यों के प्रति दृढ़ संकल्पित रहें।

जुलाई के बाद एकादश स्थान के शनि धनागम में वृद्धि करते रहेंगे। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। नई संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने कर्ज से मुक्त होंगे एवं तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख-सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध मिला-जुला रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल में विषता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। हालांकि द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि को दर्शाता है। मार्च के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति-पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके भाई-बहनों के लिए बहुत ही शुभ है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं।

28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। अतः उस के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। फिर भी अपने बच्चों के स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न करें। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

साल का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिहाज से अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

28 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगी। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा जिसके फलस्वरूप आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ्य महसूस करेंगे। फिर भी आपको अपने खान-पान पर संयम रखना चहिए। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। मार्च के बाद अध्ययन कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको जुलाई के बाद मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 28 मार्च से आप अपने जीवनसाथी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक यात्रा भी आपको लाभ देकर जाएगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 28 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, ध्यान करना, पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपका लगाव और बढ़ेगा।

• बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णुजी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।

• दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।

• गणेशजी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-

ॐ गं गणपतये नमः ।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि एकादश भाव में और सिंह राशि का राहु द्वादश भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आप कुछ विशेष करने वाले हैं। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए श्रेष्ठ है। कानून से जुड़े लोगों अच्छा लाभ मिलेगा। 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

अप्रैल के बाद आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। आपके विरोधी बढ़ेंगे जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में किसी से मतभेद हो सकता है। ऐसी स्थिति में आपको घबराना नहीं चाहिए और बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए, क्योंकि अन्त में सफलता आपको ही मिलने वाली है। अतः आत्मविश्वसा के साथ कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति को देखें तो वर्ष के प्रारम्भ में ही आय के स्रोत सृजित होंगे। एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए बहुत ही श्रेष्ठ है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल होंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय कम एवं व्यय ज्यादा होने का योग बन रहा है। ऐसे में आपको अनावश्यक खर्च रोकना चाहिए। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक स्थिति में कुछ उतार-चढ़ाव होंगे। जीवनसाथी के साथ मधुर संबंध रहेंगे। भाईयों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे, लेकिन माता के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। चिंता न करें इससे आपकी माता की भावनाएं आहत नहीं होंगी। रिश्तेदारों और चाहने वालों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे।

गुरु ग्रह का गोचर आपके ससुराल वालों के साथ संबंध खराब कर सकता है जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या

विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य के प्रति आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। यदि दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। उनको स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा। आप रोग मुक्त रहने वाले हैं। खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखेंगे। परन्तु 6 अप्रैल के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी बीमारी से परेशान हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा प्रभावित रहने वाला है।

द्वादशस्थ राहु के कारण आपके अंदर रोग-प्रतिरोधक शक्ति कम होगी। आप अपने आप को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफे बढ़ सकती हैं। तुला दान व अन्न दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के प्रारम्भ में ही प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करेंगे। एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा। आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे। व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साईंस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी।

6 अप्रैल के बाद समय कुछ खास अच्छा नहीं रहेगा। कुछ लोग आपके विरुद्ध षड्यंत्र भी बना सकते हैं। बेवजह आपके ऊपर आरोप भी लगाया जा सकता है, जिससे आप काफी तनाव महसूस करेंगे। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा के लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। द्वादश स्थान के राहु अचानक आपको विदेश यात्रा करा सकते हैं। ऑफिस व व्यवसाय से संबंधित छोटी-मोटी यात्राएं होती

रहेंगी। 6 अप्रैल के बाद जन्मभूमि की यात्रा करेंगे।

किसी भी प्रकार की यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तसे दुर्घटना हो सकती है। क्योंकि अष्टम स्थान का गुरु एवं द्वादश स्थान का राहु चोट चपेट का प्रबल योग बना रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास रहेगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में सम्मिलित होंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वों को हंसी खुशी मनाएंगे। 6 अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। ॐ नमः शिवाय मन्त्र का प्रत्येक दिन पाठ करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें और सूर्य नमस्कार करें आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(05/09/2024 - 05/09/2040)

आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा 05/09/2024 को आरम्भ तथा 05/09/2040 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है। गुरु आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव में स्थित है। पाँचवां भाव संतान, आनन्द, आमोद-प्रमोद, रोमांस, वर्ग-पहेली जैसी प्रतियोगी स्पर्धाओं, लॉटरी, प्रेम-संबंध, अच्छी या बुरी मानसिकता, धार्मिक बौद्धिकता, उच्च शिक्षा तथा सत्ता, विशाल संपत्ति आदि का भाव है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है। पांचवे भाव में स्थित यह आपकी कुण्डली के 9वें, 11वें तथा पहले भाव को प्रभावित करता है। 16 साल की यह अवधि आपके लिए शान्तिपूर्ण, समृद्धिदायक तथा कल्याणकारी होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु पाँचवें भाव में स्थित है। यह एक त्रिकोण है। गुरु का प्रभाव प्रथम भाव (9वें तथा 11वें के अतिरिक्त) पर है जो व्यक्तित्व तथा व्यक्तिगत मामलों के भाव के साथ-साथ एक त्रिकोण और केन्द्र भी है। फलतः आपकी शत्रुओं से रक्षा होगी। किसी बड़ी दुर्घटना की सम्भावना नहीं है। आप अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए एक सामान्य जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

गुरु पाँचवें भाव में स्थित है जो प्रतिस्पर्धा तथा विशाल सम्पत्ति का भाव है। अतः आपको अपनी संपत्ति तथा वित्त को बढ़ाने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे।

व्यवसाय :

इस दशा काल में आप अत्यन्त ही बुद्धिमान रहेंगे और तर्कशास्त्र तथा कानून में अभिरुचि रहेगी। नौकरी में आपकी पदोन्नति होगी तथा धनोपार्जन का अवसर मिलेगा।

व्यवसाय के प्रति आपके दिमाग में नई-नई योजनाएँ आएंगी जिनके क्रियान्वित होने पर आपको स्रोत तथा वित्त बढ़ाने का अवसर मिलेगा और समाज का सहयोग प्राप्त होगा। गुरु के 11वें भाव पर, (9वें तथा पहले भाव के अतिरिक्त) जो आय का भाव है, प्रभाव के फलस्वरूप आपकी आय में वृद्धि होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु का संबंध दोनों त्रिकोणों के साथ, पाँचवें में स्थित होने तथा 9वें एवं पहले (जो एक त्रिकोण और केंद्र भी है) पर दृष्टि होने से आपका पारिवारिक जीवन काफी उत्साहपूर्ण तथा खुशहाल होगा। आपके जीवनसाथी सहयोगी तथा सहायक होंगे। आपके बच्चे अत्यन्त आज्ञाकारी होंगे। आपका पारिवारिक जीवन अच्छा होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

दोनों त्रिकोणों से सम्बद्ध तथा पंचम भाव में स्थित गुरु की दृष्टि ९वें और पहले भाव (त्रिकोण तथा केन्द्र) पर होने के कारण आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी तथा बच्चे आज्ञाकारी होंगे।

अंतर्दशा :- गुरु - गुरु
(05/09/2024 - 25/10/2026)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 05/09/2024 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 05/09/2024 को प्रांरभ होकर 25/10/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपको संतान से खुशी मिलेगी। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। घर में मांगलिक उत्सव हो सकते हैं। सलाहकार के पद पर कार्य कर सकते हैं। समृद्धि का समय है, पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। भौतिक प्रगति के बहुत से अवसर आएंगे। उच्चशिक्षा उत्तम होगी या शिक्षा पूर्ण हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को विभिन्न माध्यमों से धनार्जन होगा, प्रभावशाली मित्र होंगे, सफलता और समृद्धि का योग है। आपके पिता धनी ओर सौभाग्यशाली रहेंगे। माता धनी होंगी ; कार्यों में सफल रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए लाभ, उत्कृष्ट समय और साझेदारी से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है; अप्रत्याशित घटना घट सकती है। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा; परिवर्तन हो सकता है। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचनतंत्र की देखभाल करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- गुरु - शनि
(25/10/2026 - 07/05/2029)

आपकी बृहस्पति की महादशा 05/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 25/10/2026 को प्रांरभ होकर 07/05/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपकी आय बढ़ेगी। स्वयं के परिश्रम से धन कमाएंगे। सुख-साधन उपलब्ध होंगे, मगर कुछ देर लग सकती है। कटु शब्द बोलने से बचें क्योंकि इससे परिवार की शांति भंग हो सकती है। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। सफलता प्राप्त करने के लिए बाधाएं पार करनी होंगी। कार्यों के लिए प्रशंसा होगी। बड़े भाई-बहनों और चाचा से संबंध मधुर रहेंगे। आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। वसीयत या साझेदारी से लाभ हो सकता है।

आपके पिता को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी। माता का धनार्जन उत्तम होगा।

अगर वे कार्यरत हैं तो प्रोन्नति होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, यात्राएं होंगी। परामर्शदाता सफल होंगे। व्यापारियों के कार्य में अप्रत्याशित लाभ हो सकता है, परिवर्तन संभव है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों और दांतों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की भैरव रुप में पूजा करें।

अंर्तदशा :- गुरु - बुध
(07/05/2029 - 13/08/2031)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 05/09/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 07/05/2029 को प्रारंभ होकर 13/08/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाज़िरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आपको विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा। आपके बहुत से प्रभावशाली मित्र होंगे। विज्ञान और गणित में प्रवीण बन सकते हैं। समृद्धि और प्रसन्नता का योग है। निवेश से लाभ हो सकता है। कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि हो सकती है। नये-नये विचार आएंगे, कल्पनाशक्ति सबल होगी। शिशु का जन्म हो सकता है। संतान सुखकारी होगी। करतब के खेल, नाटक और बाल मनोविज्ञान में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा; निवेश से लाभ होगा। आपके पिता की लघु यात्राएं हो सकती हैं, महत्वपूर्ण फैसले कर सकते हैं। माता को विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा; ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, विश्वविद्यालय में प्रवेश, विद्वानों की संगति का संकेत है।

आपकी संतान को साझेदारी से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार में लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो आय अच्छी होगी, कार्यों में सफलता मिलेगी; प्रसिद्ध और लोकप्रिय होंगे। परामर्शदाताओं की आय उत्तम होगी; सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बायें कान और पैरों के रोगों से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए गाय को हरा चारा और सब्ज़ियां खिलाएं।

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

विमलयोग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्द्वावैः विमलयोगः।
किंचिद्व्ययो भूरिधनाभिवृद्धिं प्रयात्ययं सर्वजनानुकूल्यम्।
सुखी स्वतन्त्रो महनीयवृत्तिर्गुणैः प्रतीतो विमलोद्भवः स्यात्।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6।। श्लोक 57,69 ।।

जिसकी जन्मपत्रिका में द्वादशेष दुःस्थान में स्थित और अशुभ ग्रह युक्त या निरीक्षत हो तो विमल योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु,सूर्य योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग अच्छी प्रकार से स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप मितव्ययी, धन संचय करने वाले, सुखी, स्वतंत्र, सद्गुणी, अच्छे कार्यकर्त्ता एवं समदर्शी व्यक्ति होंगे।

छत्रयोग

भावैः सौम्युतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
सुसंसारसौभाग्यसन्तानलक्ष्मी
निवासो यशस्वी सुभाषी मनीषी।
अमात्यो महीशस्य पूज्यो धनाढ्यः

स्फुरत्तीक्ष्णबुद्धिर्भवेच्छत्रयोगे।।
।। फलदीपिका ।। अ. 4/श्लोक 44, 49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव में शुभग्रह हों या शुभ ग्रह से पंचम भाव निरीक्षित हो तथा पंचमेश अस्त न हो और वह स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो छत्रयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शनि   योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सौभाग्यशाली, पुत्रवान, धनवान, यशस्वी, बुद्धिमान, प्रखर वक्ता, तेज बुद्धिवाले और राजसुख से युक्त राजा के मंत्री होंगे। आप राजसरकार से सम्मानित होंगे। आपको पंचम भाव से संबन्धित सभी सुख प्राप्त होंगे।

नीचभंग राजयोग

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्तद्राशिनाथोऽपि तदुच्चनाथः।
स चन्द्रलग्नाद्यदि केन्द्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती।।
।। फलदीपिका।। अ. 7/श्लोक 26।।

यदि जन्मकाल के समय कोई ग्रह नीच राशि में स्थित हो तथा इस नीच राशि का स्वामी चंद्रमा से केंद्र में हो और जो ग्रह नीच है और उसका उच्चनाथ भी चंद्रमा से केंद्र में हो तो नीचता भंग हो जाती है। अर्थात् उत्तम राजयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,शनि,चंद्र   योग की संभावना : 108 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निश्चय ही राजसुख का भोग करेंगे। सभी आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त होकर राजा के समान प्रतिष्ठित होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,शुक्र   योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु,शुक्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।

।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

दन्त रोग योग

वाक्स्थानपे षष्ठगते सराहौ राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा।
दन्तस्य रोगं पतनं च तेषां भुक्तौ तयोर्वा प्रवदन्ति तज्ज्ञाः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.- 3/श्लो.-113।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीयेश राहु के साथ षष्ठ स्थान में हो अथवा राहु जिस राशि में है उसके स्वामी से युक्त हो तो उसकी दशान्तर्दशा में दातों का रोग होता है तथा दन्तहीन हो जाता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जब राहु स्थित भावस्वामी की दशान्तर्दशा आएगी तब दन्त रोग होकर आपको दन्तहीन कर देगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तालु रोग योग

तदीश्वरेणापि युतेन्दुपुत्रे सराहुकेतावरिभायुक्ते।
राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा भुक्तौ तदा तालुभवः स रोगः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-3/श्लो.-116।।

यदि जन्मकुंडली में द्वितीयेश से युक्त बुध राहु या केतु सहित षष्ठस्थान में हो अथवा जिस राशि में राहु है उसके स्वामी से युक्त हो तो तालु स्थान में रोग द्वितीयेश की दशा में होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र योग की संभावना : 864 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उपर्युक्त ग्रहों की दशा का काल में तालु स्थान में रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

शास्त्राग्निव्याघ्रसर्पादि पीड़ा योग

पापर्क्षयुक्ते निधने सपापे
शस्त्रानलव्याघ्रभुजङ्गपीडा।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-20।।

यदि जन्मकुंडली में अष्टमेश पाप ग्रह हो और आठवें भाव में पापग्रह भी हों तो शस्त्र, अस्त्र, अग्नि, व्याघ्, सर्पादि की पीड़ा होती है।

योग कारक ग्रह : राहु,मंगल — योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शस्त्र/ अस्त्र/अग्नि/व्याघ्र या सर्पादि से पीड़ा होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,शुक्र — योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु　　　　योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र　　　　योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र,बुध,शुक्र　　　　योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शुक्र,चंद्र,गुरु — योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

स्त्री मृत्यु या अपुत्र योग

दारेशे सुतगे प्रणष्टवनितोऽपुत्रोऽथवा ।
।। फलदीपिका ।। अ.-10/श्लो.-2 ।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश संतान भाव में स्थित हो तो पत्नी या पुत्र मर जाता है।

योग कारक ग्रह : गुरु — योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी मर सकता है अथवा आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा संभाव्य है।

अतिकामी योग

पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ कामुकः।
।। जातकपारिजात ।। अ.-14/श्लो.-3।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश पाप ग्रह से युक्त हो तथा लग्नेश भी पापग्रह से युक्त हो तो अति कामी योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध — योग की संभावना : 16 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अतिकामी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विकलांग योग

चन्द्रक्षेत्रे यदा भौमो जायते मनुजः सदा।
रक्तपित्तेन हीनाङ्गो नानाव्याधिसमन्वितः।।
।। मानसागरी ।। अ.4/अरि.-57।।

यदि जन्मकुंडली में चन्द्र के क्षेत्र में मंगल स्थित हो तो जातक रक्त-पित्त के विकार से हीन अङ्ग और नाना प्रकार की व्याधियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल — योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप रक्त-पित्त दोष से दुखी तथा विकलांग होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

सर्पदंश से मृत्यु योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ. 312-28।।

यदि जन्मकुंडली में अष्टमभाव में राहु हो तथा उसपर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो सर्पदंश से मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शनि,मंगल,राहु — योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण सर्प दंश से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु — योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

काहल योग- प्रथम विधि

''अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ।।

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,बुध योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्रग्म पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : शनि,राहु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो

"केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र   योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध,शुक्र,सूर्य   योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।